Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(सूरत अल् ईनाम : 55)

अनुवाद : और जब तेरे पास वे लोग आएं जो हमारी आयात पर ईमान लाते हैं तो (उनसे) कहा कर तुम पर सलाम हो (तुम्हारे लिए)तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत फ़र्ज़ कर दी है। (अर्थात) यह कि तुम में से जो कोई जहालत से बदी का इर्तिकाब करे फिर इसके बाद तौबा कर ले और इस्लाह कर ले तो (याद रखे कि) वह (अर्थात अल्लाह) निसंदेह बहुत बख़शने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 21

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

24 शवाल 1443 हिज्री कमरी, 26 हिजरत 1401 हिज्री शम्सी, 26 मई 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

हज़रत साद बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु की त्याग की भावना

(2048) हज़रत अबदुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : जब हम मदीना में आए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे और साद रज़ियल्लाहु अन्हु बिन रबी को आपस में भाई भाई बना दिया तो साद रज़ियल्लाहु अन्हु बिन रबी ने कहा : मैं अंसार में से ज़्यादा मालदार हूँ। इसलिए मैं तक़सीम करके आधा माल आप रज़ियल्लाहु अन्हु को दे देता हूँ और देखिए मेरी दो पत्नियों में से जो आप रज़ियल्लाहु अन्हु पसनद करें, मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए उससे विमुख हो जाऊंगा। जब उसकी इद्दत गुज़र जाए तो उस से आप रज़ियल्लाहु अन्हु निकाह कर लेना। रावी कहता है कि (यह सुन कर) हज़रत अबदुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा : मुझे इसकी कोई ज़रूरत नहीं। क्या यहां कोई मंडी है जिसमें व्यापार होता हो? तो उन्होंने कहा क़ैनक़ाअ की मंडी है। रावी कहता है कि हज़रत अबदुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु यह मालूम कर के सुब्ह-सवेरे वहां गए और पनीर और घी ले आए। रावी ने कहा : फिर ईसी तरह हर सुबह आप रज़ियल्लाहु अन्हु मंडी में जाते रहे। अभी कुछ अरसा नहीं गुज़रा था कि हज़रत अबदुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उन पर ज़ाफ़रान का निशान था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : क्या आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने शादी करली है? अर्ज़ किया : जी हाँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: किस से? कहा : अंसार की एक औरत से। फ़रमाया : कितना मेहर दिया है? अर्ज़ किया : एक गुठली बराबर सोना या (ये कहा कि) सोने की गुठली। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन से फ़रमाया : वलीमा करो ख़ाह एक बकरी का ही सही। (सही बुख़ारी, भाग 4 किताब अल् बीयू, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत नहल आयत : 67 وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ तफ़सीर में फ़रमाते हैं:

यह फ़रमा कर पशुओं में भी तुम्हारे लिए इबरत है

जीवित रसूल सदैव के लिए केवल मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही हो सकते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

नादान और बद-अंदेश मुख़ालिफ़ों ने इस इलम पर कभी ग़ौर नहीं किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कारों पर आरोप लगया है। परन्तु अफ़सोस है उन आँख बंद करके एतराज़ करने वालों को यह मालूम नहीं हुआ कि जिस क़दर चमत्कार हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज़ाहिर हुए हैं, दुनिया में समस्त नबियों के चमत्कारों को भी अगर उन के मुक़ाबला में रखें, तो मैं ईमान से कहता हूँ कि हमारे पैग़ंबर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कार सबसे बढ़कर साबित होंगे। इस बात के अतिरिक्त कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों से क़ुरआन शरीफ़ भरा पड़ा है और क़ियामत तक और इसके बाद तक की भविष्यवाणियां इस में मौजूद हैं। सबसे बढ़कर सबूत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों का यह है कि हर ज़माना में इन भविष्यवाणियों का ज़िंदा सबूत देने वाला मौजूद होता है। इस लिए इस ज़माना में अल्लाह तआला ने मुझे बतौर निशान खड़ा किया और भविष्यवाणियों का एक अज़ीमुश्शान निशान मुझे दिया ता में उन लोगों को जो हक़ायक़ से बे-बहरा और मार्फ़त इलाही से वंचित हैं, रोज़ रोशन की तरह दिखादूँ कि हमारे पैग़ंबर ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कारों कैसे मुस्तक़िल और दाइमी हैं।

क्या बनी इसराईल के बक़ीया यहूद या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ख़ुदावनद ख़ुदावनद पुकारने वाले ईसाइयों में कोई है जो इन निशानात में मेरा मुक़ाबला करे। मैं पुकार कर कहता हूँ कि कोई भी नहीं। एक भी नहीं। फिर यह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चमत्कार दिखाने वाली शक्ति का प्रमाण है क्योंकि ये प्रमाणित बात है कि नबी के चमत्कार ही वे चमत्कारों कहलाते हैं, जो उस के किसी अनुयायी के हाथ पर सरज़द हों। अतः जो निशानात ख़वारिक़ आदात मुझे दिए गए हैं,जो भविष्यवाणियों का अज़ीमुश्शान निशान मुझे अता हुआ है, यह वास्तवम में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़िंदा चमत्कार हैं और किसी दूसरे नबी के अनुयाइयों को यह आज फ़ख़र नहीं है कि वे इस तरह पर दावत कर के ज़ाहिर कर दे कि वे भी अपने अंदर अपने अनुसरणीय नबी की कुदसी-ए- क़ुव्वत की वजह से ख़वारिक़ दिखा सकता है। यह फ़ख़र केवल इस्लाम को है और इसी से मालूम होता है कि ज़िंदा रसूल सदैव के लिए केवल मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही हो सकते हैं, जिनके नफ़ूस-ए- तय्यबा और क़ुव्वत क़ुदसिया के अधीन हर ज़माना में एक मर्द-ए-ख़ुदा ख़ुदा नुमाई का सबूत देता रहता है। (मल् फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 373 प्रकाशन 2018 क़ादियान)

तुम्हारे लिए पशुओं में भी यक़ीनन नसीहत हासिल करने का ज़रीया मौजूद है, क्या तुम देखते नहीं कि इनके गोबर और ख़ून के मध्य से हम तुम्हें पीने के लिए पाक और साफ़ दूध प्रदान करते हैं जो पीने वालों के लिए ख़ुशगवार होता है

क्या लतीफ़ बात वर्णन फ़रमाई है। पशु आहार के तौर पर भी काम आते हैं। उनमें से दूध भी लिया जाता है। उनका गोश्त भी खाया जाता है। इसके इलावा इनाम अस्बाब उठाने के भी काम आते हैं। अरब में ज़्यादा-तर ऊंट इस काम आते थे क्योंकि वहां गाय बैल कम होते हैं लेकिन दूसरे मुल्कों में बेल भी बोझ उठा कर ले जाने में बहुत मदद देते हैं। रह गईं बकरियां और भेड़ें अतः कुछ पहाड़ी मुल्कों में उनसे भी सामान उठाने का काम लिया जाता है विशेषता जबकि सफ़र ऊंचे पहाड़ों का हो तो उन जानवरों पर थोड़ा थोड़ा समान लाद कर पशु पालने वाले किराया का फ़ायदा भी उठा लेते हैं। मैं ने कांगड़ा में देखा है कि लाहौल के पहाड़ों पर से आने वाले गडरीए अपने अस्बाब कसरत से भेड़ों पर लाद कर लाते हैं। सैंकड़ों भेड़ों पर दस दस, बीस बीस सैर समान लदा हुआ अजीब लुतफ़ देता है। अतः सब चार पैरों वाले ही अस्बाब उठाने का काम देते हैं। अतः عِبْرَة का शब्द जो عُبُور से निकला है जिसके माने सफ़र के भी होते हैं उसे इस्तिमाल कर के इस तरफ़ इशारा फ़रमाया कि जानवरों से सफ़रों में काम लेते हो वह तुमको और तुम्हारे अस्बाब को एक जगह से दूसरी जगह तक ले जाते हैं परन्तु उनसे इबरत हासिल नहीं करते। अर्थात

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

"संक्षिप्त ख़ुलासा हमारी तालीम का यही है कि इन्सान अपनी समस्त ताक़तों को ख़ुदा की तरफ़ लगा दे"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

रमज़ानुल मुबारक की मुनासबत से हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात-ए-मुबारका की रोशनी में जमाअत को ख़ालिस तक़्वा के हुसूल की नसीहत

"इस्लाम का कमाल तो तक़्वा है जिससे विलायत मिलती है, जिससे फ़रिश्ते कलाम करते हैं, ख़ुदा तआला ख़ुशखबरी देता है"

"हक़ीक़ी तक़्वा के साथ जाहेलियत जमा नहीं हो सकती, हक़ीक़ी तक़्वा अपने साथ एक नूर रखती है"

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 अप्रैल 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आजकल हम रमज़ान के महीने से गुज़र रहे हैं और तक़रीबन बीस दिन गुज़र गए। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हर मोमिन इस महीने में यह कोशिश करता है कि वे ज़्यादा से ज़्यादा इस महीने के फ़ैज़ से हिस्सा ले। अल्लाह तआला ने रोज़ों की फ़र्ज़ीयत के हुक्म में शुरू में ही रोज़े का यह उद्देश्य वर्णन फ़रमाया है कि रोज़े तुम पर इसलिए फ़र्ज़ किए गए हैं ताकि तुम तक़्वा इख़तियार करो।

अतः रोज़ों और रमज़ान के फ़ैज़ से हम तभी हिस्सा पा सकेंगे जब हम रोज़ों के साथ अपने तक़्वा के मयार भी बुलंद करने वाले होंगे। हर किस्म की बुराईयों से बचने के लिए अल्लाह तआला की पनाह में आने की कोशिश करेंगे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ा ढाल है।

(सही अल् बुख़ारी, किताब अल् तौहीद, बाब قول الله تعالیٰ یریدون ان یبدلوا کلام الله, हदीस 7492) क्या केवल नाम का रोज़ा रखना ही हमारे लिए काफ़ी है? सेहरी और अफ़तारी करना ही काफ़ी है? क्या हमारा इतना काम ही हमें रोज़े की ढाल के पीछे ले आएगा कि हमने सेहरी और अफ़तारी कर ली? नहीं बल्कि इसके लवाज़मात को भी देखना होगा और बुनियादी उद्देश्य जो अल्लाह तआला ने बताया है जैसा कि मैंने कहा कि वह यह है कि لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ (अल् बकरः : 184) ताकि तुम तक़्वा इख़तियार करो। अतः अगर हमने अपने रोज़ों को, अपने रमज़ान को वे रोज़े और रमज़ान बनाना है जो अल्लाह तआला की ख़ातिर हो अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए हो, जिसका अज्र स्वयं अल्लाह तआला बनता हो तो हमें फिर उसे इस मयार पर लाना होगा जो ख़ुदा तआला हम से चाहता है और जिस के लिए रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं और वे जैसा कि मैंने कहा अल्लाह तआला ने स्पष्ट फ़र्मा दिया है कि अल्लाह तआला का तक़्वा इख़तियार करो।

हम अपने आपको मोमिन कहते हैं, मुस्लमान कहते हैं, यह दावा करते हैं कि हमने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्शादात पर अमल करते हुए, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपने ईमान को कामिल करते हुए इस बात को भी माना है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार जिस मसीह और मह्दी ने आना था वह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम के वजूद में आ चुका है और अब दीन-ए-इस्लाम की निशात-ए-सानिया का काम अल्लाह तआला के वादे के अनुसार इस मसीह और मह्दी के हाथ से ही होना है। अतः हमारा फ़र्ज़ है कि अपने अंदर इस्लाम की हक़ीक़ी रूह को क़ायम रखने के लिए मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से ही मार्ग दर्शन लें।

इस लिए जब हम देखते हैं कि तक़्वा के विषय में आप इरशाद फ़रमाते हैं तो इस मज़मून से भी हमें आगाही होती है कि तक़्वा क्या है? जैसा कि मैंने कहा कि हम ये दावा करते हैं कि हम मुस्लमान हैं और हम ईमान लाने वालों में शामिल हैं तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं तो फिर सुनो कि ईमान का पहला मरहला यह है कि इन्सान तक़्वा इख़तियार करे और फिर फ़रमाया कि तक़्वा क्या है?

फिर इस का उत्तर यह है कि हर किस्म की बदी से अपने आपको बचाना। अब अगर हम जायज़ा लें तो यह कोई मामूली बात नहीं है। हमें अपने जायज़ा से ही पता चल जाएगा कि क्या हम तक़्वा का हक़ अदा करते हुए हुक़ूक़ुल्लाह की अदायगी कर रहे हैं। क्या हम तक़्वा पर चलते हुए अल्लाह तआला की मख़लूक़ के हक़ अदा कर रहे हैं। आप ने फ़रमाया कि यह बात कि तक़्वा क्या है उस वक़्त तक पता नहीं चल सकती जब तक इन बातों का मुकम्मल इलम न हो। इलम हासिल करना ज़रूरी है क्योंकि बग़ैर इलम के कोई चीज़ हासिल ही नहीं हो सकती, उसको आदमी पा ही नहीं सकता। आप ने फ़रमाया कि यह इलम हासिल करने के लिए कि क्या अल्लाह तआला के हक़ हैं? क्या बंदों के हक़ हैं? किन बातों से अल्लाह तआला ने रोका है? किन बातों के करने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है इस के लिए बार-बार क़ुरआन शरीफ़ को पढ़ो। फ़रमाया और तुम्हें चाहिए कि जब क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहे हो तो बुरे कामों की तफ़सील लिखते जाओ और फिर ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और ताईद से कोशिश करो कि इन बदियों से बचते रहो। आप ने फ़रमाया कि यह तक़्वा का पहला मरहला होगा।

अतः इस रमज़ान में हम क़ुरआन शरीफ़ भी पढ़ रहे हैं और साधारणतः क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा होती है तो इस सोच से पढ़ना चाहिए कि उसके वे आदेश जो करने और रुकने का आड़ आदेश हैं हमने ग़ौर करना है और बुरे कामों से रुकना है और अच्छे कामों को अदा करने की कोशिश करनी है। इन पर अमल करने की कोशिश करनी है। आप ने फ़रमाया क़ुरआन शरीफ़ में अव्वल से आख़िर तक अमर और नवाही (धर्म ने जिन कर्यों के करने का आदेश दिया है और जिन कार्यों से मना किया है) और अहकाम-ए-इलाही की तफ़सील मौजूद है। अतः हमें इन चीज़ों को देखना होगा, इन पर ग़ौर करना और उन पर अमल करना होगा और यही एक मोमिन की निशानी है। आप इस बात को बड़े ज़ोर से वर्णन फ़रमाया कि जब तक इन्सान मुत्तक़ी नहीं बनता उसकी इबादात और दुआओं में क़बूलीयत का रंग पैदा नहीं होता क्योंकि अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया है, जैसा कि फ़रमाता है। اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ (अल् मायदा : 28) अर्थात : निसंदेह अल्लाह तआला मुत्तक़ियों की ही इबादत को क़बूल फ़रमाता है। फ़रमाया यह सच्ची बात है कि नमाज़ रोज़ा भी मुत्तक़ियों का ही क़बूल होता है। फिर इसका जवाब दिया कि इबादात की क़बूलीयत क्या है? और इस से मुराद क्या है? क़बूलीयत क्या चीज़ है? तो इस का जवाब यह है कि जब हम यह कहते हैं कि नमाज़ क़बूल हो गई है तो इस से मुराद यह होती है कि नमाज़ के असरात और बरकात नमाज़ पढ़ने वाले में पैदा हो गए हैं। जब तक वे बरकात और असरात पैदा न हों, फ़रमाया उस वक़्त तक निरी टक्करें ही हैं। अतः हमें देखना होगा कि क्या हमारा रमज़ान, हमारे रोज़े हमें इस मयार पर ले जाने की कोशिश कर रहे हैं? आप ने फ़रमाया कि ऐबों और बुराईयों में अगर डूबा ही रहा तो तुम ही बताओ कि इस नमाज़ ने इस को क्या फ़ायदा पहुंचाया। चाहिए तो यह था कि नमाज़ के साथ उस की बुराईयां और बदीयाँ जिन में वे ग्रस्त था कम हो जातीं और नमाज़ इसके लिए एक उम्दा ज़रीया है। फ़रमाया अतः पहली मंज़िल और मुश्किल उस इन्सान के लिए जो मोमिन बनना चाहता है यही है कि बुरे कामों से परहेज़ करे और इस का नाम तक़्वा है। (उद्धरित भाग 8 पृष्ठ 374 से 377 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः हमारी इबादतों, हमारे रोज़े, हमारा क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने में अगर हम में अमली तबदीलीयां पैदा नहीं कीं और तक़्वा जिसका हुसूल रोज़ों का उद्देश्य है वह हासिल करने की कोशिश नहीं की तो हमने अपने रोज़ों के उद्देश्य को पूरा नहीं किया।

शेष पृष्ठ 6 पर

ईद के दिन यह अह्द करना चाहिए कि मैं अल्लाह तआला के हक़ अदा करने की भी मुस्तक़िल कोशिश करता रहूँगा और बंदों के हक़ अदा करने की भी नियमित कोशिश करता रहूँगा तभी हमारी ईदें हक़ीक़ी ईदें होंगी।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः ईदुल फ़ित्र सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 02 मई 2022 ई॰ स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद (बर्तानिया)

तशह्हुद, ताअव्वुज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित आयत की तिलावत की और इस का अनुवाद पेश फ़रमाया :

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرًا (अल् निसा आयत : 37) इस आयत का अनुवाद है : और तुम अल्लाह तआला की इबादत करो और किसी चीज़ को उस का शरीक न बनाओ और माता पिता के साथ बहुत एहसान करो और तथा रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों के साथ और इसी तरह रिश्तेदार हमसाइयों और बे-तअल्लुक़ हमसाइयों और पहलू में बैठने वाले लोगों और मुसाफ़िरों और जिनके तुम मालिक हो उनके साथ भी। और जो मुतकब्बिर और इतराने वाले हों उन्हें अल्लाह कदापि पसंद नहीं करता।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अल्लाह तआला आज हमें ईद मनाने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मा रहा है लेकिन एक मोमिन के लिए हक़ीक़ी ईद केवल यही नहीं कि अच्छे कपड़े पहन लिए अच्छे खाने खा लिए। दोस्तों के साथ मज्लिस में बैठ कर ख़ुश गपियों में वक़्त गुज़ार लिया। ईद की नमाज़ पढ़ कर समझ लिया कि अब ईद का फ़र्ज़ तो अदा हो गया इस लिए अब खुली छुट्टी है जो चाहो करो। न उस दिन वक़्त पर ज़ुहर की नमाज़ की अदायगी का ख़्याल न अस्र की नमाज़ का ख़्याल न बाक़ी नमाज़ों का ख़्याल और अगर ख़्याल आया भी तो जल्दी जल्दी जमा कर के पढ़ ली। बल्कि कुछ लोग तो ईद की नमाज़ भी नहीं पढ़ते और जब ईद की नमाज़ हो जाती है तो बड़े एहतेमाम से उठकर तैयार हो कर ईद के दिन की जो दूसरी रौनक़ें हैं उनमें व्यस्त हो जाते हैं जैसे यही ईद का उद्देश्य है। यह मैं बात केवल बात नहीं कर रहा बल्कि मैंने ऐसे लोग देखे हैं जो ईद की नमाज़ भी नहीं पढ़ते और कह देते हैं कि हमें नींद आ गई थी हम सोए रहे।

याद रखना चाहिए कि ईद वाला दिन तो ज़्यादा इबादत वाला दिन है। आम दिनों में तो पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं और ईद वाले दिन छः नमाज़ें फ़र्ज़ हैं। यहाँ तक कि औरतों को भी जिन्हें कुछ दिनों में नमाज़ माफ़ होती है उन्हें भी ईद वाले दिन ईद-गाह जाने का हुक्म है। अतः ईद के दिन की बहुत एहमीयत है। ईद वाले दिन केवल एक त्योहार मनाने की तरह जमा होने का दिन नहीं है बल्कि इस में अल्लाह तआला ने जो हमारे सपुर्द काम किए हैं उनका आम दिनों से बढ़ कर हक अदा करना ज़रूरी है। अपनी इबादत के भी हक़ अदा करना ज़रूरी है और बंदों के हक़ अदा करना भी ज़रूरी है। इस दिन यह अह्द करना चाहिए कि मैं अल्लाह तआला के हक़ अदा करने की भी मुस्तक़िल कोशिश अब करता रहूँगा और बंदों के हक़ अदा करने की भी नियमित कोशिश करता रहूँगा तभी हमारी ईदें हक़ीक़ी ईदें होंगी। अतः ऐसी ईदों को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला ने हमें इन हुक़ूक़ की अदायगी की क़ुरआन-ए-करीम में बहुत जगह तवज्जा दिलाई है। अगर हम आज ईद के दिन यह अह्द करते हुए इन हुक़ूक़ और फ़रायज़ की अदायगी पर तवज्जा दें कि आइन्दा हमने उनको अपनी ज़िंदगीयों का हिस्सा बनाना है जिनका मैं उमूमी तौर पर पिछले जुमा के ख़ुतबात में भी वर्णन करता रहा हूँ तो हमने अपने रमज़ान के उद्देश्य को पा लिया और ईद मनाने के उद्देश्य को भी पाने वाले होंगे।

यह आयत जो मैंने तिलावत की है इस में अल्लाह तआला ने कुछ फ़रायज़ की तरफ़ तवज्जा दिलाई है और ये अदा न करने वाले तकब्बुर करने वाले और शेख़ी बघारने वाले हैं और ऐसे लोगों को अल्लाह तआला पसंद नहीं करता। अतः जिन्हें अल्लाह तआला पसंद नहीं करता न उनका दीन है न दुनिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी एक अवसर पर इस का बड़ा सख़्त इंज़ार फ़रमाया है। आपने फ़रमाया कि जिसके दिल में ज़र्रा भर भी तकब्बुर होगा अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाख़िल नहीं होने देगा। एक शख़्स ने अर्ज़ किया कि इन्सान चाहता है कि अच्छा कपड़ा पहने अच्छी जूती पहने ख़ूबसूरत लगे तो यह किस ज़ुमरे में आएगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह तकब्बुर नहीं है आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला तो ख़ुद ख़ूबसूरत है और ख़ूबसूरती को पसंद फ़रमाता है। आपने फ़रमाया तकब्बुर यह है कि इन्सान हक़ का इन्कार करे। लोगों को ज़लील समझे उन्हें हक़ारत की नज़र से देखे और उनसे बुरी तरह से पेश आए। अतः ईद वाले दिन अच्छे कपड़े पहनना तैयार होना ख़ुशबू लगाना ये सब चीज़ें अल्लाह तआला को पसंद हैं लेकिन उनको फ़ख़र और तकब्बुर का ज़रीया बनाना यह अल्लाह तआला को पसंद नहीं है। इस आयत में इन बातों की तरफ़ तवज्जा दिला कर फिर आख़िर में कहा है कि अल्लाह तआला हर मुतकब्बिर और शेख़ी दिखाने को पसंद नहीं फ़रमाता इन बातों में अल्लाह तआला का भी हक़ है और बंदों का हक़ भी है। अल्लाह तआला का हक़ है कि उस की इबादत की जाए। अब यह बेशक अल्लाह तआला का हक़ है कि उसकी इबादत की जाए और किसी चीज़ को इस का शरीक न ठहराया जाए लेकिन इस का फ़ायदा बंदे को है। लोग पूछते हैं अल्लाह तआला को इस का क्या फ़ायदा है। अल्लाह तआला को इस का कोई फ़ायदा नहीं है। नमाज़ों का इबादतों का अल्लाह तआला के ज़िक्र का अल्लाह तआला को याद करने का फ़ायदा हमें है और अल्लाह तआला हमें इस का बदला देता है इस लिए एक रिवायत में है कि एक आदमी ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया। हे अल्लाह के रसूल मुझे कोई ऐसा अमल बताएं जो मुझे जन्नत में ले जाए और आग से दूर कर दे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला की इबादत कर उस के साथ किसी को शरीक न ठहरा नमाज़ पढ़ ज़कात दे और सिला रहमी कर। अर्थात रिश्तेदारों से प्यार और मुहब्बत का सुलूक करो। अतः देखें किस तरह अल्लाह तआला नवाज़ रहा है। दुनिया में भी नवाज़ रहा है और अगले जहान में भी जन्नत की ख़ुशख़बरी दे रहा है।

फिर एक और रिवायत में आता है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो केवल अल्लाह के लिए दो ईदों की रातों में इबादत करेगा उस का दिल हमेशा के लिए ज़िंदा कर दिया जाएगा। कितनी बड़ी ख़ुशख़बरी है। अल्लाह तआला की ख़ातिर इबादत करने से हमेशा के लिए इनाम मिल रहा है। अतः ईद केवल ख़ुशियां मनाने का नाम नहीं है बल्कि उस की रातों को इबादतों से ज़िंदा करने का नाम है और इस से हमेशा के लिए फिर रुहानी ज़िंदगी हासिल हो जाती है। वे लोग जो समझते हैं कि रमज़ान ख़त्म हुआ अब आराम से सोएँगे। रमज़ान ख़त्म होने और ईद मनाने को हमें अपनी इबादतों से रुख़स्त या कमी का इजाज़तनामा नहीं समझ लेना चाहिए। ये इबादतें ही हैं जो हमारी दुनयावी और आख़िरी ज़िंदगी में अल्लाह तआला के फ़ज़लों का वारिस बनाने की ज़मानत बनेंगी। अल्लाह तआला ने इबादतों की तरफ़ तवज्जा दिलाने के बाद इस आयत में हुक़ूक़ुल ईबाद की अदायगी की तरफ़ तवज्जा दिलाई है। फ़रमाया माता पिता के साथ एहसान करो। अल्लाह तआला की रबूबियत के बाद माता पिता का सबसे बड़ा एहसान है जिन्हों ने पाल पोस कर बड़ा किया। यह ऐसा एहसान है जिसका बदला हम कभी उतार ही नहीं सकते। यहां माता पिता से एहसान से मुराद है कि हमेशा उनसे नरमी और प्यार से बात करो। उनका इज़्ज़त और एहतिराम करो। अल्लाह तआला दूसरी जगह फ़रमाता है فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ अर्थात उन्हें उफ़ भी नहीं करना। अतः यह वह सुलूक है जिसका एक मोमिन को माँ बाप से करने का हुक्म है। फिर रिश्ता दारों से हुस्न-ए-सुलूक का हुक्म है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो रिज़्क़ की फ़राख़ी चाहता है या जो चाहता है कि इस की उम्र में बरकत पड़े और इस का ज़िक्र-ए-ख़ैर ज़्यादा हो उसे सिला रहमी का ख़लक़ इख़तियार करना चाहिए। अपने सगे रिश्तेदार हैं या ससुराल की तरफ़ से रिश्तेदार हैं उनका ख़्याल रखना चाहिए जो लोग आसूदा हाल हैं उन्हें ईद की ख़ुशियों में अपने अज़ीज़ों को भी शामिल करना चाहिए। एक शख़्स ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मैं रिश्तेदारों से नेक सुलूक करूँ तब भी वे ताल्लुक़ तोड़ते हैं तो ऐसी सूरत में में क्या करूँ। आपने फ़रमाया कि तू जो कह रहा है अगर वह सच्च है तब भी इसी तरह करो। उनसे नेक सुलूक करो। यह तुम्हारा उन पर एहसान है और जब तक तुम उनसे यह सुलूक करते रहोगे अल्लाह तआला तुम्हारी मदद करता रहेगा। अतः नेक काम करना हमारा काम है और ईद की हक़ीक़ी ख़ुशी तभी है जब यह नेक सुलूक बग़ैर किसी बदले और अज्र के इन्सान करता रहे।

शेष पृष्ठ 10पर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आयरलैण्ड की यात्रा, सितम्बर 2014 ई. (भाग-7)

डबलिन शहर की ओर यात्रा

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इन्सानियत के ख़ातिर फ़िक्रमंद और ग़मगीं होने का एक कारण यह भी थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा तआला के हक़ीक़ी पैगंबर थे। क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला ने बार-बार बनीनौ इन्सान को अमन और भाईचारे की ओर बुलाया है। अतः रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के हक़ीक़ी पैगंबर होने के नाते सख़्त बेचैन हो जाते कि बनीनौ इन्सान अल्लाह तआला के संदेश की ओर ध्यान नहीं दे रहा। इस में कोई शक नहीं कि जब अल्लाह तआला बनीनौ इन्सान को अमन की ओर बुलाता है तो इसी लिए बुलाता है कि अल्लाह तआला भी संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए अमन चाहता है। अतः अल्लाह तआला की अमन के क़ियाम की यह इच्छा ही है जिसके कारण से वह संसार में अपने पैगंबर भेजता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के प्यारे नबी थे और हमारे अक़ीदा के अनुसार ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम थे जिनके माध्यम से शरीयत कामिल कर दी गई। जब यह शरीयत कहती है कि अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ के लिए चाहता है कि वह अमन और सफ़लता से रहे तो फिर यह कैसे सम्भव है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मख़लूक़-ए-ख़ुदा को अमन, सुकून और सफ़लता के अतिरिक्त किसी और ओर बुलाऐं? इस में कोई शक नहीं कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने समस्त कर्तव्य अदा किए और संसार को उत्तम तरीन रंग में अमन की ओर बुलाया और नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) कभी भी किसी किस्म के अत्याचार और फ़साद पर नहीं उकसाया बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमेशा प्रत्येक किस्म की सांप्रदायिकता, नफ़रत और फ़साद की भरपूर निंदा की।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उदाहरण के तौर पर मदीना में जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हाकिम निर्धारित हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हुकूमत क़ायम हुई तो कुछ ग़ैर मुस्लिम समाज को ज़हर-आलूद करना चाहते थे और समाज में बदअमनी पैदा करना चाहते थे। परन्तु उनकी इस बदनीयती के बावजूद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके साथ अत्यधिक प्यार और शफ़क़त का व्यवहार फ़रमाया। जो भी इस्लामी के आरम्भ में तारीख़ का मुंसिफ़ाना ढंग में अध्ययन करे वे देखेगा कि हमेशा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने विश्वव्यापी अमन और संरक्षण को निश्चित बनाने और प्रत्येक किस्म की बदअमनी, द्वेष और न इंसाफ़ी के ख़ातमा की हर सम्भव प्रयास किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने फ़रमाया :

एक और बिंदु जो मैं वर्णन करना चाहता हूँ वह यह है कि इस्लाम का ख़ुदा वह ख़ुदा है जो समस्त जहानों का रब है और यह वह चीज़ है जोकि क़ुरआन-ए-करीम की पहली सूरत में वर्णनहुई है। अर्थात ख़ुदा वह ख़ुदा है जो समस्त जहानों का पालन पोषण और नशो नुमा करता है और जो इन्सानियत की प्रत्येक ज़ाहिरी-ओ-रुहानी आवश्यकता पूरी करता है। इस्लाम का ख़ुदा वह ख़ुदा है जो समस्त मख़लूक़ात का स्रष्टा है और जिसने समस्त सच्चे मुस्लमानों को नसीहत की है कि प्रत्येक सम्भव हद तक वे ख़ुदा तआला की सिफ़ात अपनाते हुए उस का क़ुरब और प्यार प्राप्त करने का प्रयास करें और ख़ुदा की सिफ़ात में "सलाम और मोमिन" भी शामिल हैं। अर्थात वह ऐसी ज़ात है जो प्रत्येक को अमन और संरक्षण फ़राहम करती है। जैसा कि मैंने अभी कहा कि वह समस्त जहानों का रब है और यह भी ख़ुदा की एक सिफ़त है। इस लिए जब ख़ुदा तआला अपने बंदों को अपनी सिफ़ात इख़तियार करने की नसीहत करता है तो हक़ीक़ी मोमिन जो ख़ुदा पर विश्वास रखता हो और इस की सिफ़ात प्राप्त करने की कोशिश करता हो, कैसे सम्भव है कि वह ग़ैर मुंसिफ़ या अत्याारी हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अतः वह इस्लाम जिस पर मैं ईमान लाया हूँ और जिसकी में पैरवी करता हूँ वह न तो अत्याचारी है और न इंतिक़ाम लेने पर विश्वास रखता है। और न ही किसी किस्म के अत्याचार और फ़साद और न इंसाफ़ी की तलक़ीन करता है और न ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को नफ़रत और अत्याचार फैलाने के लिए मबऊस फ़रमाया गया बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को चशमा-ए-रहमत बनाकर भेजा गया था जो हमेशा इन्सानियत के लिए अबदी और आलमगीर मुहब्बत के लिए जारी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

आख़िरी ज़माना के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी को देखा जाए कि यह किस ढंग में पूरी हुई तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सदाक़त और भी स्पष्ट हो जाती है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि एक ऐसा ज़माना आएगा कि मुस्लिम संसार रुहानी इन्हितात और तारीकी का शिकार हो जाएगी। जब इस्लामी शिक्षाएं आलूदा हो जाएँगी और मुस्लमानों की एक भारी अधिकतर संख्यां गुमराह हो चुकी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि एक समय आएगा जब मुस्लमानों के अधिकतर बिल्कुल अख़लाक़ खो बैठेगी और उनमें इन्साफ़, अमन और रहम नाम का भी नहीं रहेगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि जबकि क़ुरआन-ए-करीम अपनी ज़ाहिरी हालत में सुरक्षित रहेगा जबकि मुस्लमान उसकी शिक्षाओं पर अनुकरण नहीं करेंगे। मुस्लमान उल्मा या मौलवी केवल नाम के उल्मा होंगे और उनके अनुकरण इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं के विपरीत होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

ये समस्त भविष्यवाणियां वर्णन फ़रमाने के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐसे ज़माना में अल्लाह तआला मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजेगा ताकि इस्लाम की असल शिक्षाओं को अज़सर-ए-नौ ज़िंदा किया जाए और उस समय मौजूदा रुहानी इन्हितात को ख़त्म किया जाए। हज़रत-ए-अक़दस मसीह -ए-मौऊद अलैहिस्सलाम को क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षाओं को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत के अनुसार संसार में इस्लाम की शिक्षाओं को पुनः से नाफ़िज़ करने के लिए भेजा गया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

मेरे ईमान के अनुसार जिस मसीह मौऊद की भविष्यवाणी फ़रमाई गई थी वह आ चुका है। इस लिए मैं और समस्त अहमदी मुस्लमान यह विश्वास रखते हैं कि हमारी जमाअत के संस्थापक हज़रत-ए-अक़दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ही मसीह मौऊद और मह्दी हैं, जो अमन और मुहब्बत पर आधारित इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को संसार के प्रत्येक कोने में फैलाने के लिए पधारे। आप संसार को इस्लाम की हक़ीक़ी सुन्दरता बताने के लिए पधारे। आप प्रत्येक किस्म के ज़ुलम-ओ-सितम और आक्रामकता के विरुद्ध जिहाद करने के लिए पधारे। आप इन्सानियत को एक दूसरे के जायज़ हुक़ूक़ अदा करने की शिक्षा देने के लिए पधारे। आप मुहब्बत और शफ़क़त का प्रचार करने के लिए और संसार में जन्नत नज़ीर अमन क़ायम करने और संसार में इत्तिहाद और आपसी भाई चारा के क़ियाम के लिए पधारे। यही आप अलैहिस्सलाम का संदेश था और यही आपका था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

यही वह विशेष संदेश है जो अहमदिया मुस्लिम जमाअत संसार के प्रत्येक कोने और प्रत्येक क्षेत्र में फैलाने का प्रयास कर रही है। अतः यह प्रत्येक अहमदी की ज़िम्मेदारी है चाहे वे संसार के किसी भी क्षेत्र में रिहायश पज़ीर हो कि इस शांति प्रिय संदेश को बड़े जोश से फैलाए और इस का प्रचार करे। यही वह संदेश है जो दुनिया-भर में प्रत्येक अहमदी मस्जिद से निकलता है। हमारी मस्जिदें अमन और आपसी प्रेम का केंद्र हैं, जहां इन्सानियत को मुहब्बत और प्यार से मुत्तहिद करने वाले इकट्ठे

होते हैं ताकि आपसी प्रेम पैदा किया जाए , इबादत की जाए और समस्त इन्सानियत के अमन, संरक्षण और सफ़लता के लिए दुआ की जाए। हमारी मस्जिदें उन लोगों से भरी हैं जो केवल अमन का नाम ही नहीं लेते बल्कि प्रत्येक सम्भव प्रयास करते हैं कि संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए अमन और संरक्षण को निश्चित बनाया जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने फ़रमाया :

इन्सानी सफ़लता, अमन और हक़ीक़ी इन्साफ़ को तक़वियत देने के लिए हम ने समाज की प्रत्येक सतह पर जो प्रयास किया हैं उन पर हमारी तारीख़ गवाह है। हमारी आयरलैंड की यह मस्जिद भी इसी उद्देश्य के लिए क़ायम की गई है। इस का नाम मस्जिद मर्यम रखा गया है। मर्यम या जिसे आप Mary कहते हैं मुस्लमानों में भी उतनी ही इज़्ज़त से जानी जाती हैं जितनी कि ईसाइयत में। क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला ने मर्यम का कई बार वर्णन फ़रमाया है और उन के आला तरीन स्थान का वर्णन किया है। निश्चित हज़रत मर्यम अलैहिस्सलाम नेक और पाक-बाज़ महिला थीं जिन्हें इस्लाम में इस हद तक इज़्ज़त दी गई है कि क़ुरआन-ए-करीम में आता है कि प्रत्येक हक़ीक़ी मुस्लमान मर्यम की मानिंद है यह इसलिए है कि हज़रत मर्यम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से बहुत प्यारा सम्बन्ध क़ायम किया था और आपने अपनी नेकी और इफ़्फ़त की प्रत्येक समय हिफ़ाज़त की। आपने अल्लाह तआला से विशेष मुहब्बत का सम्बन्ध क़ायम किया कि अल्लाह तआला बराह-ए-रस्त हज़रत मर्यम अलैहिस्सलाम से हमकलाम हुआ और स्वयं उस की पाकदामनी की गवाही दी। हज़रत मर्यम अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला के समस्त सुहुफ़ पर ईमान रखती थीं, पाक-बाज़ थीं और आपने ख़ुदा तआला की इताअत में एक विशेष स्थान प्राप्त किया था। हज़रत मर्यम अलैहिस्सलाम निश्चित समस्त सच्चे मोमिनीन के लिए एक उदाहरण हैं। आप अलैहिस्सलाम का आला स्थान इस बात से भी स्पष्ट है कि क़ुरआन-ए-करीम कहता है कि हक़ीक़ी मुस्लमान मर्यमी सिफ़ात के हामिल होने चाहिऐं। यदि वे इस जैसे होंगे तो निश्चित वे किसी को नुक़्सान और तकलीफ़ देने वाले नहीं होंगे। इस लिए प्रत्येक अहमदी मुस्लमान अपने अंदर मर्यम जैसी पाकीज़गी, परहेज़गारी और पाकबाज़ी पैदा करने की प्रयास करता है। अतः देखें कि क़ुरआन-ए-करीम ने मोमिनीन के लिए अत्यधिक सुन्दर उदाहरण वर्णन फ़रमाई है। यदि मुस्लमान इस मयार पर पूरा उतरें तो वह कभी दूसरों को तकलीफ़ देने वाले और बदअमनी का कारण नहीं बनेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अब यह मस्जिद बन चुकी है । आप देखेंगे कि किस तरह यह रोशन तालीम जो मैंने वर्णन की है इस मस्जिद से हर तरफ फैलेगी। निश्चित यही वह शिक्षा है जो दुनिया-भर में हज़ारों अहमदी मस्जिदें के माध्यम से फैला रहें हैं। हाल ही में अफ़्रीकन शहर में ऐसी ही एक अहमदिया मस्जिद क़ायम हुई है। इस मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर एक ईसाई चीफ़ भी शामिल हुआ, जोकि इस से पहले जमाअत से परिचित नहीं था। जब वह आया तो उसने बताया कि मैं किसी अहमदी से सम्बन्ध या जमाअत से सम्बन्ध की आधार पर इस समारोह में शामिल नहीं हुआ बल्कि जब मैंने इस समारोह का दावतनामा देखा तो मैं हैरान रह गया कि एक मुस्लमान जमाअत मस्जिद के उद्घाटन के लिए किसी ईसाई को बुला रहें हैं? इस लिए इसी हैरानगी को दूर करने के लिए मैं इस समारोह में शामिल हुआ हूँ कि स्वयं जाकर देखूं कि ये किस किस्म का इस्लाम है, जिसमें एक मुस्लमान जमाअत ने ईसाई को अपनी मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर दावत दी है। उसने कहा कि जब मैं यहां पहुंचा तो ये देख कर मेरी हैरानगी की इंतिहा न रही कि समाज के प्रत्येक सतह से सम्बन्ध रखने वाले और विभिन्न धर्मों से सम्बन्ध रखने वाले लोग इस समारोह में निमंत्रित हैं। इस चीफ़ ने अपनी तक़रीर में कहा कि सबको साथ लेकर चलने की इस रूह ने यह प्रकट किया है कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने न केवल इस क्षेत्र को नई मस्जिद दी है बल्कि इस क्षेत्र को एक नई जीवन दिया है और स्थानीय लोग को आपस में मिल-जुल कर आपसी प्रेम और आपसी मुहब्बत से रहने के नए तरीक़ हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

इसलिए आज इस मस्जिद, जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ कि रीपब्लिक आफ़ आयरलैंड की पहली अहमदिया मस्जिद है, का हमारी समस्त मस्जिदों की तरह उन्हें इक़दार और उद्देश्य पर आधार रखते हुए उद्घाटन किया जा रहा है। ये हक़ीक़ी इस्लामी शिक्षाओं को उजागर करने का होगा।

जहां एक ओर हम समस्त दुनिया में अपनी मस्जिदें में ख़ुदा का नाम लेते हैं और दूसरों को शांतिप्रिय तरीक़ पर इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि ख़ुदा-ए वाहिद के सामने सिर झुकाना हैं और उनके लिए दुआ करते हैं वहां हम जैसे और जहां भी सम्भव हो इन्सानियत की सेवा करने का प्रयास करते हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

आप सब इन शा अल्लाह देखेंगे कि यह मस्जिद भी उन्ही इक़दार की हामिल होगी। आप मुशाहिदा करेंगे कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत के लोग की यह दिल्ली-ख़्वाहिश है कि समस्त लोग चाहे उनके एतिक़ादात कुछ भी हों, या वे पूर्णता धर्म से दूर हों, अमन से रहें। आप देखेंगे कि अहमदी मुस्लमान समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्यार, मुहब्बत और हमदर्दी की सच्ची भावनाएं हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने भाषण के आख़िर में फ़रमाया : इन शब्दों के साथ में एक मर्तबा फिर आप सबको इस समारोह में शामिल होने और मेरी बातें सुनने का शुक्रिया अदा करते हुए आपसे आज्ञा चाहता हूँ। अल्लाह तआला आप पर फ़ज़ल करे। आप सब का बहुत शुक्रिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह भाषण नौ बजकर पाँच मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

इसके बाद सभी मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ में खाना खाया। खाने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ प्रेम पूर्वक मेहमानों से मिलने के लिए बारी बारी प्रत्येक टेबल पर तशरीफ़ ले गए और मेहमानों से बातचीत फ़रमाई और लोगों को शरफ़-ए-हाथ मिलाने सौभाग्य दिया।

इस अवसर पर कुछ मेहमानों ने दरख़ास्त करके हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया।

यह प्रोग्राम साढ़े दस बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी अपार्टमंट में तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के भाषण का प्रत्येक आने वाले मेहमान पर गहरा प्रभाव हुआ और कुछ मेहमान अपने विचारों का प्रकटन किए बिना न रह सके।

हुज़ूर अनवर के भाषण पर मेहमानों के विचार

डिप्टी मेयर गालवे काओंटी Mr.Nian Byrne ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा :

इस महान अवसर पर मैं जमाअत अहमदिया के समस्त लोगों को मुबारकबाद प्रस्तुत करता हूँ। मस्जिद मर्यम आपकी जमाअत के लिए एक भेंट है। विभिन्न अक़ायद से सम्बन्ध रखने वाले लोगों को एक जगह जमा होते देखना अत्यधिक ख़ुशी की बात है और इस बात का सबूत है कि आयरलैंड और विशेषता गालवे शहर इस्लाम अहमदियत को स्वागत कहता है।

हम आप लोगों की ज़बरदस्त मेहमान-नवाज़ी पर भी शुक्रिया अदा करते हैं।

गालवे काओनटी के एक कौंसिलर Tom Healy ने कहा : इस महान मस्जिद के उद्घाटन पर मैं अहमदिया मुस्लिम जमाअत को मुबारकबाद

शेष पृष्ठ 11 पर

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ02 का शेष

हमने इस ढाल के विषय में बातें तो की हैं जिसके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ा ढाल है लेकिन हमने इस ढाल के इस्तिमाल का तरीक़ सीखने की कोशिश नहीं की। हमने सेहरी और अफ़तारी का एहतिमाम तो किया लेकिन हमने सेहरी और अफ़तारी खाने के उद्देश्य को पूरा नहीं किया। हमने सारा दिन बग़ैर खाए पिए गुज़ार तो दिया लेकिन हमने इस फ़ाक़े के उद्देश्य को पूरा नहीं किया। अतः हमें ये जायज़े लेना होंगे कि जो उद्देश्य तक़्वा से पूरा होता है और जो तक़्वा हम में पैदा होना चाहिए थी वह हुई कि नहीं हुई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ और इक़तेबासात भी मैं तक़्वा के बारे में प्रस्तुत करता हूँ जिनसे हमारी राहनुमाई होती है कि असल तक़्वा क्या है और किस किस्म का तक़्वा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम में पैदा करना चाहते हैं?

इस बारे में एक अवसर पर आप ने फ़रमाया कि "असल तक़्वा जिससे इन्सान धोया जाता है और साफ़ होता है और जिस के लिए अम्बिया आते हैं वह दुनिया से उठ गया है। कोई होगा जो قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا (अश्शम्स : 10) का मिस्दाक़ होगा अर्थात जिसने उस को पाक किया वह अपना उद्देश्य पा गया। फ़रमाया कोई होगा जो قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَاكَ का मिस्दाक़ होगा। "पाकीज़गी और तहारत उम्दा चीज़ है। इन्सान पाक और पवित्र हो तो फ़रिश्ते उस से मुसाफ़ा करते हैं। लोगों में इस की क़दर नहीं है अन्यथा उनकी लज़्ज़ात की हर अक्षय हलाल माध्यमों से उनको मिले। चोर चोरी करता है कि माल मिले लेकिन अगर वे सब्र करे तो ख़ुदा तआला उसे और राह से मालदार कर दे गा और यह चोरी सिर्फ़ ज़ाहिरी चोरी नहीं है। कुछ कारोबारी लोग भी जो अपनी ग़लत किस्म की चीज़ें बेचते हैं वे भी इसी ज़ुमरे में आ जाती हैं। "इसी तरह व्यभिचारी व्यभिचार करता है अगर सब्र करे तो ख़ुदा तआला उस की इच्छा को और राह से पूरी कर दे जिसमें उस की रज़ा हासिल हो। हदीस में है कि कोई चोर चोरी नहीं करता परन्तु इस हालत में कि वह मोमिन नहीं होता और कोई व्यभिचारी व्यभिचार नहीं करता परन्तु इस हालत में कि वह मोमिन नहीं होता।" अर्थात कि ईमान जब दिल से निकल जाता है तो उसी वक़्त फिर इन्सान से इस किस्म की हरकतें होती हैं। फ़रमाया कि "जैसे बकरी के सिर पर शेर खड़ा हो तो वह घास भी नहीं खा सकती तो बकरी जितना ईमान भी लोगों का नहीं है।" गुनाहों और बुराईयों को जब इन्सान करता है तो उस वक़्त यह एहसास होना चाहिए कि ख़ुदा तआला हमें हर वक़्त देख रहा है। फ़रमाया कि "असल जड़ और उद्देश्य तक़्वा है। जिसे वह हासिल हो तो सब कुछ पा सकता है बग़ैर उसके सम्भव नहीं है कि इन्सान छोटे और बड़े गुनाहों से बच सके।" छोटे गुनाहों और बड़े गुनाहों से बच्चे।" इन्सानी हुकूमतों के अहकाम गुनाहों से नहीं बचा सकते हुक्काम साथ साथ तो नहीं फिरते कि उनको ख़ौफ़ रहे। इन्सान अपने आपको अकेला ख़्याल कर के गुनाह करता है अन्यथा वह कभी न करे और जब वह अपने आपको अकेला समझता है इस वक़्त वह दहरिया होता है।" ईमान उस के अंदर कोई नहीं होता। ख़ुदा उस के दिल से निकल चुका होता है। वह उस वक़्त दहरिया हो जाता है "और यह ख़्याल नहीं करता कि मेरा ख़ुदा मेरे साथ है वह मुझे देखता है अन्यथा अगर वह यह समझता" कि ख़ुदा देख रहा है" तो कभी गुनाह नहीं करता। तक़्वा से सब चीज़ें है। क़ुरआन ने इबतिदा ही इसी से की है। اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ (अल् फ़ातिहा : 5) से मुराद भी तक़्वा है कि इन्सान जबकि अमल करता है परन्तु ख़ौफ़ से साहस नहीं करता कि उसे अपनी तरफ़ मंसूब करे और उसे ख़ुदा की सहायता से ख़्याल करता है और फिर इसी से आइन्दा के लिए मदद तलब करता है।" अल्लाह तआला से मदद मांगता है। अगर नेकी की भी तो यह नहीं कि मेरा कोई कमाल है मेरा दिल नेक है या मैं बहुत आला नेकी के मयार पर पहुंच गया हूँ बल्कि यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है कि उसने मुझे इस नेकी की नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ दी, दुआ करने की तौफ़ीक़ दी। "फिर दूसरी सूरत भी هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ (अल् बकरः : 3) से शुरू होती है। नमाज़, रोज़ा, ज़कात इत्यादि सब उसी वक़्त क़बूल होता है जब इन्सान मुत्तक़ी हो। उस वक़्त ख़ुदा समस्त दाई गुनाह के उठा देता है।" अर्थात गुनाह की तरफ़ बुलाने वाली तमाम चीज़ें जो हैं अगर तक़्वा हो तो उन को अल्लाह तआला दूर कर देता है। "बीवी की ज़रूरत हो तो बीवी देता है, दवा की ज़रूरत हो तो दवा देता है। जिस चीज़ की हाजत हो वह देता है और ऐसे स्थान से रोज़ी देता है कि उसे ख़बर नहीं होती।" फ़रमाया कि "एक और आयत क़ुरआन शरीफ़ में है اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا (हा मीम सजदह : 31) इस से भी मुराद मुत्तक़ी हैं। ثُمَّ اسْتَقَامُوْا यानी उन पर ज़लज़ले आए, इबतिला आई, आंधीयां चलीं परन्तु एक अह्द जो इस से कर चुके उस से न फिरे।" वफ़ा के साथ अल्लाह तआला से ताल्लुक़ रखा। ईमान एक दफ़ा ले आए तो ईमान पर मज़बूत होते चले गए। यह नहीं कि ज़रा ज़रा सी बात पर ईमान हिलने लग जाए, मुतज़लज़ल हो जाए।

"फिर आगे ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि जब उन्होंने ऐसा किया और सिदक़ और वफ़ा दिखलाई तो इस का प्रतिफल यह मिला تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ अर्थात उन पर फ़रिश्ते उतरे और कहा कि ख़ौफ़ और दुख मत करो। तुम्हारा ख़ुदा मुतवल्ली है। وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ(हा मीम सजदह : 31) और बिशारत दी कि तुम ख़ुश हो इस जन्नत से और इस जन्नत से यहां मुराद दुनिया की जन्नत है। जैसे क़ुरआन-ए-मजीद में है وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ(अल् रहमान : 47) फिर आगे है نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ(हा मीम सजदह : 32) दुनिया और आख़िरत में हम तुम्हारे वली और मुतकफ़्फ़िल हैं।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 4 पृष्ठ 251से 253 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः क्या ख़ुश-क़िस्मत हैं जिनका अल्लाह तआला मित्र हो जाये और मुतकफ़्फ़िल हो जाए, जो अपना हर काम ख़ुदा की रज़ा के हुसूल के लिए करने वाले हो।

फिर इस बात की वज़ाहत फ़रमाते हुए कि मोमिन और काफ़िर की कामयाबी में क्या अंतर होता है, मोमिन किस तरह अपनी कामयाबी को देखता है और काफ़िर किस तरह देखता है। फ़रमाया कि इस उसूल को हमेशा मद्द-ए-नज़र रखो कि मोमिन का काम यह है कि वह किसी कामयाबी पर जो उसे दी जाती है शर्मिंदा होता है। शर्मिंदा क्यों होता है? यह इज़हार होता है उस से कि मैं तो इस क़ाबिल नहीं था अल्लाह तआला के फ़ज़्ल ने यह सब कुछ दे दिया। जो भी अता है ये अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ही हुई है न कि मेरी किसी ख़ूबी की वजह से, मेरे किसी इलम की वजह से, मेरी अक़्ल की वजह से, मेरी दौलत की वजह से या मेरे जस्मानी हालत की वजह से। नहीं बल्कि यह ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल है और जब यह एहसास होता है तो फिर ख़ुदा तआला की हमद करता है कि उसने अपना फ़ज़्ल किया और इस तरह पर वह क़दम आगे आगे रखता है और हर इबतिला में साबित-क़दम रह कर ईमान पाता है। फ़रमाया कि याद रखो कि काफ़िर की कामयाबी ज़लालत की राह है और मोमिन की कामयाबी से इस के लिए नेअमतों का दरवाज़ा खुलता है। काफ़िर क्योंकि हर चीज़ अपने पर फ़ख़र करता है और इस का क्रेडिट अपने ऊपर लेता है तो वह गुमराही में गिरता चला जाता है लेकिन मोमिन, हक़ीक़ी मोमिन जब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल की तरफ़ हर चीज़ मंसूब करता है तो फिर उसके ऊपर नेअमतों का दरवाज़ा खुलता चला जाता है। फ़रमाया कि काफ़िर की कामयाबी इसलिए ज़लालत की तरफ़ ले जाती है कि वह ख़ुदा की तरफ़ रुजू नहीं करता बल्कि अपनी मेहनत, दानिश और क़ाबिलीयत को ख़ुदा बना लेता है परन्तु मोमिन ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजू कर के ख़ुदा से एक नया परिचय पैदा करता है और इस तरह पर हर एक कामयाबी के बाद उस का ख़ुदा से एक नया मुआमला शुरू हो जाता है और इस में तबदीली होने लगती है। اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا (अन्नहल : 129) ख़ुदा उनके साथ होता है जो मुत्तक़ी होते हैं।

याद रखना चाहिए क़ुरआन शरीफ़ में तक़्वा का शब्द बहुत मर्तबा आया है (सौ से ज़्यादा दफ़ा है) इसके अर्थ पहले शब्द से किए जाते हैं। यहां माआ का शब्द आया है अर्थात जो ख़ुदा को मुक़द्दम समझता है ख़ुदा उस को मुक़द्दम रखता है और दुनिया में हर किस्म की ज़िल्लतों से बचा लेता है। फ़रमाया कि मेरा ईमान यही है कि अगर इन्सान दुनिया में हर किस्म की ज़िल्लत और सख़्ती से बचना चाहे तो उस के लिए एक ही राह है कि मुत्तक़ी बन जाए फिर उस को किसी चीज़ की कमी नहीं। अतः मोमिन की कामयाबी उसको आगे ले जाती है और वह वहीं पर नहीं ठहर जाता। (उद्धरित भाग 1, पृष्ठ 155-156 ऐडीशन 1984 ई.)

फ़रमाया "तक़्वा का असर इसी दुनिया में मुत्तक़ी पर शुरू हो जाता है। यह केवल उधार नहीं नक़द है। बल्कि जिस तरह ज़हर का असर और तिरयाक़ का असर फ़ौरन बदन पर होता है इसी तरह तक़्वा का असर भी होता है।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 324 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः अगर नेक काम करने, इबादात करने, नेकियां बजा लाने के बावजूद इन्सान की हालत पर-असर नहीं पड़ रहा तो फिर चिंता के योग्य बात है। बहुत सारे लोग कुछ सवाल भी लिखते हैं, भेजते हैं कि किस तरह पता लगे। तो पता इसी तरह लगेगा का अगर नेकियों की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा पैदा हो रही है, अल्लाह की तरफ़ तवज्जा ज़्यादा पैदा हो रही है तो फिर वह काम इन्सान अल्लाह तआला की ख़ातिर कर रहा है और अल्लाह तआला इस में बरकत डाल रहा है।

तक़्वा की राहों की निशानदेही करते हुए, इस तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हैं कि "इन्सान की तमाम रुहानी ख़ूबसूरती तक़्वा की तमाम बारीक राहों पर क़दम मारना है। तक़्वा की बारीक राहें रुहानी ख़ूबसूरती के

लतीफ़ नुक़ूश और ख़ुशनुमा ख़त-ओ-ख़ाल हैं।'' तक़्वा की बारीक राहें क्या हैं कि रुहानी तौर पर इस में एक ख़ूबसूरती पैदा हो जाती है।" और ज़ाहिर है कि ख़ुदा तआला की अमानतों और ईमानी ओहदों की जहा तक सम्भव हो रियाइत करना और सिर से पैर तक जितने अंग और आज़ा हैं जिनमें ज़ाहिरी तौर पर आँखें और कान और हाथ और पैर और दूसरे अंग हैं और बातिनी तौर पर दिल और दूसरी क़ुव्वतें और अख़लाक़ हैं उनको जहां तक ताक़त हो ठीक ठीक समय ज़रूरत पर इस्तिमाल करना और नाजायज़ अवसरों से रोकना और उनके पोशीदा हमलों से सचेत रहना और इसी के मुक़ाबिल पर हुक़ूक़-ए-इबाद का भी।" ये चीज़ें जो हैं ईमानी अह्द हैं जो अल्लाह तआला से हमने किए हैं कि अपनी आँख को भी सही जगह इस्तिमाल करना है। बदनज़री से बचाना है। ग़लत कामों से बचाना है। कानों को भी ग़लत बातें सुनने से बचाना है। हाथ और पैर से भी नेक अमल करने हैं। दिल के अंदर जो गंदे ख़्यालात हैं उनको भी निकालना है और इस के लिए ज़्यादा से ज़्यादा इस्तिग़फ़ार भी करनी चाहिए।

दूसरी क़ुव्वतें हैं उनसे भी काम लेना है। अपने अख़लाक़ को आला मयार तक पहुंचाना है। यह अह्द हैं ईमानी अह्द जो अल्लाह तआला से इन्सान करता है। फ़रमाया कि तुमने उनको पूरा करना है और इस के मुक़ाबले पर फ़रमाया कि हुक़ूकुल ईबाद का भी लिहाज़ रखना है। बंदों के जो हुक़ूक़ हैं उनका भी ख़्याल रखना है। वे चीज़ें तो तुम्हारे अपने लिए हो गईं अब बंदों के हक़ भी अदा करने हैं और अगर ये हक़ अदा होंगे तो फ़रमाया'' ये वह तरीक़ है जो इन्सान की तमाम रुहानी ख़ूबसूरती इस से जुड़ी है।" अल्लाह के हक़ अदा हो गए, बंदों के हक़ अदा हो गए तो रुहानी ख़ूबसूरती इन्सान में पैदा हो जाती है "और ख़ुदा तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में तक़्वा को लिबास के नाम से मौसूम किया है। इस लिए لِبَاسُ التَّقْوٰی क़ुरआन शरीफ़ का शब्द है। यह इस बात की तरफ़ इशारा है कि रुहानी ख़ूबसूरती और रुहानी ज़ीनत तक़्वा से ही पैदा होती है और तक़्वा यह है कि इन्सान ख़ुदा की समस्त अमानतों और ईमानी अह्द और ऐसा ही मख़लूक़ की तमाम अमानतों और अह्द की जहाँ तक सम्भव हो रियाइत रखे अर्थात उनके दक़ीक़ दर दक़ीक़ पहलूओं पर अंत तक कारबन्द हो जाए।"

(ज़मीमा बराहीन-ए-अहमदिया भाग पांच, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 21पृष्ठ 209-210)

इबादात के बारे में अल्लाह तआला के जो हुक्म हैं, अपनी ज़ात को सही करने के बारे में, लोगों के हक़ अदा करने के बारे में उनकी बारीकियों में जा कर उन को अदा करने की कोशिश करो। अतः जब तक इन्सान हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद के बारीक दर बारीक पहलूओं पर अमल करने की कोशिश न करे उस वक़्त तक आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तक़्वा का मयार हासिल नहीं होता। अतः यह बहुत अहम नुक्ता है जिसे हमें याद रखना चाहिए कि केवल इबादतें अगर उस के साथ बंदों के हुक़ूक़ की अदायगी नहीं तो कुछ फ़ायदा नहीं देतीं और केवल मख़लूक़ के कुछ हक़ अदा कर देना और ख़ुदा तआला को भूल जाना जिस तरह लोग कहते हैं हम बंदों के हक़ अदा कर रहे हैं यह भी तक़्वा पर चलने वाले नहीं बना सकते। एक हक़ीक़ी मोमिन के लिए दोनों हुक़ूक़ का ख़्याल रखना ज़रूरी है।

फिर बिदअत के फैलने और तक़्वा से दूरी का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं कि "हज़ारों किस्म की बिदआत हर फ़िर्क़ा और गिरोह में अपने अपने रंग की पैदा हो चुके हैं। तक़्वा और तहारत जो इस्लाम का असल मंशा और उद्देश्य था जिस के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़तरनाक मसायब बर्दाश्त किए जिनको बजुज़ नबुव्वत के दिल के कोई दूसरा बर्दाश्त नहीं कर सकता वे आज मफ़क़ूद और नष्ट हो गए हैं। जेल ख़ानों में जा कर देखो कि जराइमपेशा लोगों में ज़्यादा संख्या किन की है। "अर्थात जराइम पेशा लोग जो हैं उनमें किन की संख्या है आप इस तरफ़ इशारा फ़र्मा रहे हैं कि जराइम पेशा मुस्लमान ज़्यादा हैं। घाना में हमारे एक मिनिस्टर थे। मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूँ वह बताया करते थे कि हमारी मीटिंग हो रही थी तो उन्होंने कहा कि हमारी जेलों में ज़्यादा संख्या मुस्लमानों की है। उन्होंने कहा मैं अहमदी हूँ और में यह चैलेंज करता हूँ कि इन मुस्लमानों में से तुम देख लोगे कि अहमदी कोई नहीं होगा या अहमदी होंगे तो इस निसबत के लिहाज़ से बिल्कुल बुरा-ए-नाम और जब जा के जायज़ा लिया गया तो यही बात सही निकली। तो हक़ीक़ी मोमिन, हक़ीक़ी अहमदी की यह निशानी है और यह फिर तब्लीग़ का बहुत बड़ा ज़रीया बन जाता है। अगर इस चीज़ को हम अपने सामने रखें और हर मुआमले में, हर अमल में, अपने कारोबारों में, अपनी नौकरियों में, अपनी रोज़मर्रा की लोगों के साथ dealing में अपने आला अख़लाक़ दिखलाने वाले हों, अपनी इबादतों के मयार बुलंद करने वाले हों। तक़्वा दिल में पैदा करने की कोशिश करने वाले हों, अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिल में रखने वाले हों तो फिर जहां ये हमारी इस्लाह का बायस बनेगी वहां तब्लीग़ का भी एक ख़ामोश ज़रीया बन जाती है।

फ़रमाया "व्यभिचार, शराब और इल्लाफ़-ए-हुक़ूक़ और दूसरे जरायम इस कसरत से हो रहे हैं कि गोया ये समझ लिया गया है कि कोई ख़ुदा नहीं। अगर मुख़्तलिफ़ क़ौम की ख़राबियों और नक़ाइस पर मुफ़स्सिल बेहस की जाए तो एक ज़ख़ीम किताब तैयार हो जाए। हर दानिशमंद और ग़ौर करने वाला इन्सान क़ौम के मुख़्तलिफ़ अफ़राद की हालत पर नज़र कर के इस सही और यक़ीनी नतीजा पर पहुंच जावेगा कि वह तक़्वा जो क़ुरआन-ए-करीम की इल्लत-ए-ग़ाई था जो इकराम का असल मूजिब और ज़रीया शराफ़त था आज मौजूद नहीं।" क़ुरआन-ए-करीम तो तक़्वा पैदा करना चाहता था। यही उद्देश्य था क़ुरआन-ए-क्रीम का। वह मुस्लमानों में खत्म हो गया। फ़रमाया कि "अमली हालत जिसकी अशद ज़रूरत थी कि अच्छी होती और जो ग़ैरों और मुस्लमानों में मतभेद का कारण थी सख़्त कमज़ोर और ख़राब हो गई हैं।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 4 पृष्ठ 4 ऐडीशन 1984 ई.)

अगर ऐसी हालत हो तो फिर क्या तब्लीग़ होनी है और फिर क्या मुस्लमानों का असर दुनिया पर होना है और इसी का नतीजा हम आजकल देख रहे हैं और इस का हल अहमदियों के पास है। अगर हम भी बिगड़ गए तो फिर कौन सँभालेगा। और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो अल्लाह तआला के वादे हैं वे तो पूरे होने हैं लेकिन हम अगर उनमें शामिल न हुए तो अल्लाह तआला और क़ौमों को खड़ा कर देगा और उनके ज़रीया से वादे पूरे करवा देगा।

जब हमारे मुआशरे का यह हालत हो जाये जैसी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन किया है तो हमें कितनी फ़िक्र अपने नेकी और तक़्वा के मयारों के लिए करनी चाहिए और कितनी फ़िक्र हमें अपनी नसलों की नेकी और तक़्वा के मयारों के लिए करनी चाहिए। आपने यह भी फ़रमाया कि तक़्वा यह नहीं कि अल्लाह तआला की नेअमतों से फ़ायदा न उठाया जाए बल्कि उनसे फ़ायदा नहीं उठाओगे तो यह भी तक़्वा से दूरी है।

कुछ तथाकथि बुज़ुर्ग और पीर फ़क़ीर दिखावे के लिए अपनी तरफ़ से सादा लिबास और बदमज़ा खाना खाते हैं और ज़ाहिर यह करते हैं कि हम मुत्तक़ी हैं। बड़े नेक हैं। फ़रमाया कि "याद रखो कि इन्सान को चाहिए कि हर वक़त और हर हालत में दुआ का तालिब रहे और दूसरे اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ (अल् ज़ुहा : 12) पर अमल करे। ख़ुदा तआला की अता करदा नेअमतों की तह्दीस करनी चाहिए।" उनका ज़िक्र करना चाहिए। उनका इज़हार होना चाहिए'' इस से ख़ुदा तआला की मुहब्बत बढ़ती है। और नेअमतों का इज़हार होगा तो "उसकी इताअत और फ़रमांबर्दारी के लिए एक जोश पैदा होता है। तह्दीस के यही अर्थ नहीं हैं कि इन्सान सिर्फ़ ज़बान से वर्णन करता रहे बल्कि जिस्म पर भी इस का असर होना चाहिए। मसलन एक शख़्स को अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ दी है कि वह उम्दा कपड़े पहन सकता है लेकिन वह हमेशा मैले कुचैले कपड़े पहनता है इस ख़्याल से कि वह वाजिबुर-रहम समझा जाए या उस की आसूदा हाली का हाल किसी पर ज़ाहिर न हो ऐसा शख़्स गुनाह करता है क्योंकि वह ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और करम को छुपाना चाहता है और नफ़ाक़ से काम लेता है। धोखा देता है और मुग़ालता में डालना चाहता है। यह मोमिन की शान से बईद है।' मोमिन ऐसा नहीं होता'' आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मज़हब मुश्तर्क था' अर्थात हर चीज़ जो मयस्सर थी वह आप किया करते थे। यह नहीं है कि एक तरफ़ रुजहान हो गया। आला कपड़े मिले तो आला कपड़े भी पहने। अगर नहीं थे तो आम कपड़े भी पहने। फ़रमाया कि'' आपको जो मिलता था पहन लेते थे पीछे नहीं होते थे। जो कपड़ा पेश किया जाए उसे क़बूल कर लेते थे लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कुछ लोगों ने इसी में तवाज़ो देखी कि रहबानीयत की जुज़ु मिला दी। कुछ दरवेशों को देखा गया कि गोश्त में ख़ाक डाल कर खाते थे।" अपने आपको दरवेश कहते और गोश्त में मिट्टी डाल कर खाते हैं। "एक दरवेश के पास कोई शख़्स गया उसने कहा उस को खाना खिला दो।" इस दरवेश ने अपने मुरीदों को कहा कि मेहमान को खाना खिला दो।'' इस शख़्स ने "मेहमान ने'' इसरार किया कि मैं तो आपके साथ ही खाऊंगा' मैं पीर साहिब आपके साथ ही खाऊंगा।''आख़िर जब वह इस दरवेश के साथ खाने बैठा तो उस के लिए नीम के गोले तैयार कर के आगे गए।''

नीम एक दरख़्त है जिसके पत्ते बड़े कड़वे होते हैं और निमोलियां लगती हैं वे भी बड़ी कड़वी होती हैं। इस का खाना बना के उस को कड़वा खाना पेश किया गया। इस का कोई मज़ा नहीं था। मज़ा क्या? ख़तरनाक किस्म का उसका कड़वा मज़ा था। फ़रमाया कि "इस किस्म के उमूर कुछ लोग इख़्तियार करते हैं और उद्देश्य यह होता है कि

लोगों को अपने बाकमाल होने का यक़ीन दिलाएँ। परन्तु इस्लाम ऐसी बातों को कमाल में दाख़िल नहीं करता।

इस्लाम का कमाल तो तक़्वा है जिससे विलायत मिलती है, जिससे फ़रिश्ते कलाम करते हैं, ख़ुदा तआला बशारतें देता है। हम इस किस्म की तालीम नहीं देते क्योंकि इस्लाम की तालीम के उद्देश्य के ख़िलाफ़ है। क़ुरआन शरीफ़ तो كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ कि पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ'' की तालीम दी और ये लोग पवित्र उम्दा चीज़ में ख़ाक डाल कर ग़ैर पवित्र बना दें। इस किस्म के मज़ाहिब इस्लाम के बहुत अरसा बाद पैदा हुए हैं। ये लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर इज़ाफ़ा करते हैं। उनको इस्लाम से और क़ुरआन-ए-करीम से कोई ताल्लुक़ नहीं होता। ये ख़ुद अपनी शरीयत अलग क़ायम करते हैं। मैं इस को सख़्त हक़ारत और नफ़रत की निगाह से देखता हूँ। हमारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पवित्र उदाहरण हैं। हमारी भलाई और ख़ूबी यही है कि जहां तक मुम्किन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नक़्श-ए-क़दम पर चलें और इस के ख़िलाफ़ कोई क़दम न उठाएं।''

ये तो खाने पीने की बात है। फिर रोज़मर्रा के अख़लाक़ की बात जहां तक आती है फ़रमाया कि "इसी तरह औरतों और बच्चों के साथ ताल्लुक़ात" हैं, लोगों के जो घरेलू रवैय्ये हैं उनके बारे में भी फ़र्मा दिया कि'' औरतों और बच्चों के साथ ताल्लुक़ात और मुआशरत में लोगों ने ग़लतियां खाई हैं और वे सद्मार्ग से बहक गए हैं। "सीधे रास्ते से हट गए हैं।'' क़ुरआन शरीफ़ में लिखा है कि عَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ (अल् निसा : 20) परन्तु अब उस के ख़िलाफ़ अमल हो रहा है।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 4 पृष्ठ 43-44 ऐडीशन 1984 ई.)

मारूफ़ क्या करना है उन्होंने बल्कि कुछ घरों में ज़ुलम हो रहे होते हैं। अतः अच्छे कपड़े पहनना अगर तौफ़ीक़ है, अच्छे खाने खाना अगर तौफ़ीक़ है तक़्वा में कमी नहीं करता बल्कि इज़ाफ़ा करता है। तथा समाजी अख़लाक़ के बारे में भी बताया कि अपनी पत्नी से हुस्न-ए-सुलूक करना यह भी ज़रूरी है। अपने बच्चों का ख़्याल रखना, उनकी ज़रूरीयात पूरी करना, उनकी सही तर्बीयत करना यह भी ज़रूरी है। यह भी तक़्वा है और यह क़ुरआन-ए-क्रीम का हुक्म है। अतः हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद दोनों की अदायगी ज़रूरी है।

फिर आप अलैहिस्सलाम ने एक बात बयान फ़रमाई कि मुत्तक़ी को अल्लाह तआला की तरफ़ से एक नूर दिया जाता है। इस बारे में आप फ़रमाते हैं कि "हक़ीक़ी तक़्वा के साथ जाहिलियत जमा नहीं हो सकती। हक़ीक़ी तक़्वा अपने साथ एक नूर रखता है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ (अल् अनफ़ाल : 30) (अल् हदीद : 29) अर्थात हे ईमान लाने वालो अगर तुम मुत्तक़ी होने पर साबित-क़दम रहो और अल्लाह तआला के लिए इत्तेका की सिफ़त में क़ियाम और इस्तिहकाम इख़तियार करो तो ख़ुदा तआला तुम में और तुम्हारे ग़ैरों में फ़र्क़ रख देगा। वह अंतर यह है कि तुमको एक नूर दिया जाएगा जिस नूर के साथ तुम अपनी समस्त राहों में चलोगे। अर्थात वे नूर तुम्हारे तमाम अफ़आल और अक़्वाल और अंगों और हवास में आ जाएगा। तुम्हारी अक़्ल में भी नूर होगा और तुम्हारी एक अटकल की बात में भी नूर होगा।" कोई ग़लत हरकत उस से सरज़द हो ही नहीं सकती जो अल्लाह तआला की मंशा के अनुसार चलने वाला हो। अगर होगी भी तो फ़ौरन अल्लाह तआला उस की इस्लाह की तरफ़ तवज्जा भी दिला देगा। अस्तग़फ़ार करने की तरफ़ अल्लाह तआला तवज्जा दिलाएगा। फ़रमाया कि "तुम्हारी एक अटकल की बात में भी नूर होगा और तुम्हारी आँखों में भी नूर होगा और तुम्हारे कानों और तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे बयानों और तुम्हारी हर एक हरकत और सुकून में नूर होगा और जिन राहों में तुम चलोगे वे राह नूरानी हो जाएँगी। उद्देश्य जितनी तुम्हारी राहें, तुम्हारे अंगो की राहें, तुम्हारे हवास की राहें हैं वे सब नूर से भर जाएँगी और तुम सरापा नूर में ही चलोगे।"

(आईना कमालात-ए-इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 5 पृष्ठ 177-178)

जितनी तुम्हारी राहें हैं वे नेकी की तरफ़ ले जाने वाली राहें होंगी। तुम्हारे अंग जो हैं वे भी नेक काम करने वाले होंगे। तुम्हारी सोचें और ख़्यालात जो हैं वे भी नेक हो जाएँगी। बदियों के ख़्यालात मिट जाऐंगे और जब ऐसा समाज क़ायम होता है तो फिर वे यक़ीनन तक़्वा पर चलने वालों का समाज होता है। फ़रमाया कि "क़ानून-ए-क़ुदरत क़दीम से ऐसा ही है कि ये सब कुछ मार्फ़त-ए-कामला के बाद मिलता है। भय और प्रेम और क़दरदानी की जड़ मार्फ़त-ए-कामला है अतः जिसको मार्फ़त-ए-कामला दिया गया उस को भय और प्रेम भी कामिल दिया गया। और जिसको ख़ौफ़ और मुहब्बत कामिल दिया गया उस को हर एक गुनाह से जो बेबाकी से पैदा होता है निजात दी गई।

अतः हम इस निजात के लिए न किसी ख़ून के मुहताज हैं और न किसी सलीब के हाजत-मंद और न किसी कफ़्फ़ारा की हमें ज़रूरत है बल्कि हम केवल एक क़ुर्बानी के मुहताज हैं जो अपने नफ़्स की क़ुर्बानी है। जिसकी ज़रूरत को हमारी फ़ित्रत महसूस कर रही है। ऐसी क़ुर्बानी का दूसरे लफ़्ज़ों में नाम इस्लाम है।" नफ़्स की क़ुर्बानी करना तक़्वा पर जाने का माध्यम बनता है और इसी का नाम इस्लाम है। "इस्लाम के माने हैं ज़िबह होने के लिए गर्दन आगे रख देना अर्थात कामिल रज़ा के साथ अपनी रूह को ख़ुदा के समक्ष रख देना। यह प्यारा नाम समस्त शरीयत की रूह और समस्त अहकाम की जान है। ज़िबह होने के लिए अपनी दिल्ली ख़ुशी और रज़ा से गर्दन आगे रख देना कामिल मुहब्बत और कामिल इशक़ को चाहता है और कामिल मुहब्बत कामिल मार्फ़त को चाहती है। "जब तक किसी चीज़ की मार्फ़त न हो मुहब्बत पैदा नहीं हो सकती।'' अतः इस्लाम का शब्द ईसी बात की तरफ़ इशारा करता है कि हक़ीक़ी क़ुर्बानी के लिए कामिल मार्फ़त और कामिल मुहब्बत की ज़रूरत है न किसी और चीज़ की ज़रूरत। ईसी की तरफ़ ख़ुदा तआला क़ुरआन शरीफ़ में इशारा फ़रमाता है। لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَاؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ (हज : 38) अर्थात तुम्हारी (क़ुर्बानियों) के न तो गोश्त मेरे तक पहुंच सकते हैं और न ख़ून बल्कि केवल यह क़ुर्बानी मेरे तक पहुँचती है कि तुम मुझ से डरो और मेरे लिए तक़्वा इख़तियार करो।"

(लैक्चर लाहौर, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20, पृष्ठ 151-152)

अतः यह वह तक़्वा का मयार है जो ख़ुदा तआला हमसे चाहता है। जो ख़ुदा तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम से चाहते हैं। जो ज़माने के इमाम हमसे चाहते हैं और इस की बार-बार क़ुरआन-ए-करीम में तलक़ीन की गई है और इसके हुसूल के लिए रमज़ान के महीने में रोज़ों की फ़र्ज़ीयत रखी गई है।

ख़ुश-क़िस्मत होंगे हम में से वे जो इस सोच के साथ कोशिश करेंगे कि यह तक़्वा हासिल करने के लिए रमज़ान के अन्य रोज़े हमने गुज़ारने हैं और या जो गुज़ारे हैं अल्लाह तआला करे कि वे इस तरह ही गुज़ारे हों और हमने अपने हर क़ौल और फ़ेअल को अल्लाह तआला की रज़ा के अनुसार ढालना है।

एक शख़्स हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास आया। उसने कहा कि लोग एतराज़ करते हैं कि आपने मसीह मौऊद होने का दावा किया है तो आप तो सय्यद नहीं हैं और सय्यद एक उम्मती की बैअत किस तरह कर सकता है? कुछ सय्यद और सय्यदों को ऊंचा मुक़ाम देने वाले अब भी यह एतराज़ करते हैं कि सय्यदों का ग़ैरमामूली मुक़ाम है तो सय्यद किस तरह बैअत कर सकता है ग़ैर सय्यद की? इसी तरह आजकल कुछ अरबों में यह ख़्याल पैदा हो गया है कि मसीह मौऊद ने अगर आना था तो अरबों में से आना था, ग़ैर अरबों से किस तरह आगया। हम किस तरह मान लें? क़ुरआन-ए-करीम पढ़ते हैं लेकिन ग़ौर नहीं करते जवाब तो वहां पहले से मौजूद है। ये मुक़ाम अल्लाह तआला कहता है मैंने देना होता है। बंदे नहीं हैं जो इस मुक़ाम की तक़सीम कर रहे हों। बहरहाल आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "ख़ुदा तआला न केवल जिस्म से राज़ी होता है न क़ौम से। उस की नज़र हमेशा तक़्वा पर है। اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ (अल् हुजरात : 14) अर्थात अल्लाह के नज़दीक तुम में से ज़्यादा बुज़ुर्गी रखने वाला वही है जो तुम में से ज़्यादा मुत्तक़ी हो। ये बिल्कुल झूठी बातें हैं कि मैं सय्यद हूँ या मुग़ल हूँ या पठान और शेख़ हूँ। अगर बड़ी क़ौमीयत पर फ़ख़र करता है तो ये फ़ख़र फ़ुज़ूल है। मरने के बाद सब कौमें जाती रहती हैं। ख़ुदा तआला के हुज़ूर क़ौमीयत पर कोई नज़र नहीं और कोई शख़्स महिज़ आला ख़ानदान में से होने की वजह से निजात (मुक्ति) नहीं पा सकता। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा को कहा है कि हे फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा तू इस बात पर नाज़ न कर कि तू पैग़ंबर की पुत्री है। ख़ुदा के नज़दीक क़ौमीयत का लिहाज़ नहीं।'' अतः जब हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए यह हुक्म है, यह इरशाद है तो फिर और कौन रह जाता है? फ़रमाया कि "वहां जो मदारिज मिलते हैं वे तक़्वा के लिहाज़ से मिलते हैं। यह कौमें और क़बायल दुनिया का उर्फ़ और इंतिज़ाम हैं। ख़ुदा तआला से उनका कोई ताल्लुक़ नहीं है।

ख़ुदा तआला की मुहब्बत तक़्वा से पैदा होती है और तक़्वा ही मदारिज-ए-आलीया का बायस होता है। अगर कोई सय्यद हो और वह ईसाई हो कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ग़ालियां दे और ख़ुदा के अहकाम की बेहुरमती करे। क्या कोई कह सकता है कि अल्लाह तआला उसको ऑले रसूल होने की वजह से निजात देगा। और वे बहिश्त में दाख़िल हो जाएगा। اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ (आले इमरान : 20) अल्लाह तआला के नज़दीक तो सच्चा दीन जो निजात का

बायस होता है इस्लाम है। अगर कोई ईसाई हो जाए या यहूदी हो या आर्या हो वह ख़ुदा के नज़दीक इज़्ज़त पाने के लायक़ नहीं। ख़ुदा तआला ने ज़ातों और क़ौमों को उड़ा दिया है। ये दुनिया के इंतिज़ाम और उर्फ़ के लिए क़बायल हैं। परन्तु हमने ख़ूब ग़ौर कर लिया है कि ख़ुदा तआला के हुज़ूर जो मदारिज मिलते हैं उनका असल बायस तक़्वा ही है। जो मुत्तक़ी है वे जन्नत में जाएगा। ख़ुदा तआला उस के लिए फ़ैसला कर चुका है। ख़ुदा तआला के नज़दीक सम्मानित मुत्तक़ी ही है। फिर ये जो फ़रमाया है اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ (अल् मायदा : 28) कि आमाल और दुआएं मुत्तक़ियों की क़बूल होती हैं। यह नहीं कहा कि مِنَ السَّيِّدِيْن। फिर मुत्तक़ी के लिए तो फ़रमाया مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۔ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ (तलाक़ : 3-4) अर्थात मुत्तक़ी को हर तंगी से निजात मिलती है। उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ दिया जाता है कि उस को गुमान भी नहीं होता। अब बताओ कि यह वादा सय्यदों से हुआ है या मुत्तक़ियों से। और फिर यह फ़रमाया है कि मुत्तक़ी ही अल्लाह तआला के वली होते हैं। यह वादा भी सय्यदों से नहीं हुआ। विलायत से बढ़कर और क्या रुत्बा होगा। यह भी मुत्तक़ी ही को मिला है। कुछ ने विलायत को नबुव्वत से फ़ज़ीलत दी है और कहा है कि नबी की विलायत उसकी नबुव्वत से बढ़कर है। नबी का वजूद वास्तव में दो चीज़ों से मुरक्कब होता है। नबुव्वत और वलाएत। नबुव्वत के माध्यम से वे अहकाम और शराए मख़लूक़ को देता है और वलाएत उस के ताल्लुक़ात को ख़ुदा से क़ायम करती है।

फिर फ़रमाया है। ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ (अल् बकरः 3) هُدًى لِّلسَّيِّدِيْنَ नहीं कहा। उद्देश्य ख़ुदा तआला तक़्वा चाहता है। हाँ सय्यद ज़्यादा मुहताज हैं कि वे इस तरफ़ आएं क्योंकि वह मुत्तक़ी की औलाद हैं। इस लिए उनका फ़र्ज़ है। कि वह तक़्वा इख़्तियार करने की कोशिश करें। न यह कि उनका सय्यद होना उनको कोई मुक़ाम दे रहा है। फ़रमाया कि "इसलिए उनका फ़र्ज़ है कि वे सबसे पहले आएं न यह कि ख़ुदा तआला से लड़ें कि यह सादात का हक़ था। वे जिसे चाहता है देता है ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ (अल् जुमा : 5) यह ऐसी बात है कि जैसे यहूदी कहते हैं कि बनी इसमाईल को नबुव्वत क्यों मिली। वह नहीं जानते। تِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ (आले इमरान : 141) ख़ुदा तआला से अगर कोई मुक़ाबला करता है तो वह मर्दूद है।" इस आयत का अर्थ यह है कि यह वे दिन हैं जिन्हें हम लोगों के दरमयान अदलते बदलते रहते हैं। अतः यह अल्लाह तआला का फ़ैसला है। आपने फ़रमाया ख़ुदा तआला से अगर कोई मुक़ाबला करता है। तो वह मर्दूद है "वह हर एक से पूछ सकता है। उस से कोई नहीं पूछ सकता।" (मल् फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 343 से 345 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप दावा पर इल्ज़ाम के जवाब में फ़रमाते हैं कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मबऊस हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दावा किया तो उस वक़्त भी लोगों की नज़रों में बहुत से यहूदी आलिम मुत्तक़ी और परहेज़गार मशहूर थे लेकिन इस से यह लाज़िम नहीं आता कि वह ख़ुदा तआला के नज़दीक भी मुत्तक़ी हों। ख़ुदा तआला तो उन मुत्तक़ियों का वर्णन करता है जो उस के नज़दीक तक़्वा और इख़लास रखते हैं। जब उन लोगों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दावा सुना, लोगों में जो उनकी वज़ाहत थी इस में फ़र्क़ आता देखकर उद्दंडता से इन्कार कर दिया और हक़ को इख़्तियार करना गवारा न किया। अब देखो कि लोगों के नज़दीक तो वे भी मुत्तक़ी थे परन्तु उनका नाम हक़ीक़ी मुत्तक़ी नहीं था।

हक़ीक़ी मुत्तक़ी वह व्यक्ति है कि जिसकी चाहे आबरू जाए। हज़ार ज़िल्लत आती हो। जान जाने का ख़तरा हो फिक्रो फ़ाक़ा की नौबत आई हो तो वे केवल अल्लाह तआला से डर कर इन सब नुक़्सानों को गवारा करे लेकिन हक़ को कदापि न छुपाए वह। मुत्तक़ी के यह माने जैसे आजकल के मौलवी अदालतों में वर्णन करते हैं कदापि नहीं हैं कि जो शख़्स ज़बान से सब मानता हो चाहे उस का अमल दरआमद इस पर होया न हो और वह झूठ भी बोल लेता हो, चोरी भी करता हो तो वे मुत्तक़ी है।'' अर्थात केवल मुस्लमान कह देना तक़्वा नहीं है "तक़्वा के भी मुरातिब होते हैं और जब तक कि यह कामिल न हो तब तक इन्सान पूरा मुत्तक़ी नहीं होता।

प्रत्येक वस्तु वही लाभदायक होती है जिसका पूरा वज़न लिया जाए। अगर एक शख़्स को भूख और प्यास लगी है तो रोटी का एक भूरा और पानी का एक क़तरा ले लेने से उका पेट बी भर नहीं जाएगा।'' मौलवी लोग अपने आपकी इलमीयत का इज़हार करते हैं तो यह उनका तक़्वा नहीं है तक़्वा तो पैदा होता है अमल से। किसी को मौलवी कहने से या उस के बड़ा आलिम बनने से तक़्वा नहीं पैदा हो जाता। फ़रमाया कि "अगर एक शख़्स को भूक और प्यास लगी है तो रोटी का एक भूरा और पानी का एक क़तरा ले लेने से उसे परिपूर्णतः हासिल नहीं होगी और न जान को बचा सकेगा जब तक पूरी ख़ुराक खाने और पीने की उसे न मिले। यही हाल तक़्वा की है कि जब तक इन्सान इसे पूरे तौर पर हर एक पहलू से इख़्तियार नहीं करता तब तक वह मुत्तक़ी नहीं हो सकता। और अगर यह बात नहीं तो हम एक काफ़िर को भी मुत्तक़ी कह सकते हैं क्योंकि कोई न कोई पहलू तक़्वा का (अर्थात ख़ूबी) "तो इस में होगी'' उस के अंदर ज़रूर होगी। कोई न कोई नेकी तो वह करता ही है जिससे वह मुत्तक़ी तो नहीं बन जाता।'' अल्लाह तआला ने महिज़ ज़ुल्मत तो किसी को पैदा नहीं किया।'' सारी बुराईयां तो नहीं हर एक में पैदा कीं। अच्छाईयां भी होती हैं "परन्तु तक़्वा की यह मिक़दार अगर एक काफ़िर के अंदर हो तो उसे कोई फ़ायदा नहीं पहुंचा सकती। काफ़ी मिक़दार होनी चाहिए जिससे दिल रोशन हो।'' जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है कि वह अल्लाह के भी हक़ अदा करने वाले हों और बंदों का हक़ भी अदा करने वाला हों। हर किस्म की ख़ूबियां उस में हों। फ़रमाया "ख़ुदा तआला राज़ी हो और हर एक बदी से इन्सान बच जाए। बहुत से ऐसे मुस्लमान हैं कि जो कहते हैं क्या हम रोज़ा नहीं रखते। नमाज़ नहीं पढ़ते इत्यादि इत्यादि परन्तु इन बातों से वे मुत्तक़ी नहीं हो सकते। तक़्वा और वस्तु है। जब तक इन्सान ख़ुदा तआला को मुक़द्दम नहीं रखता और हर एक लिहाज़ को ख़ाह बिरादरी का हो ख़ाह क़ौम का ख़ाह दोस्तों और शहर के रईसों का ख़ुदा तआला से डर कर नहीं तोड़ता और ख़ुदा तआला के लिए हर एक अपमान सहन करने को तैयार नहीं होता तब तक वह मुत्तक़ी नहीं है। क़ुरआन शरीफ़ में जो बड़े बड़े वादे मुत्तक़ियों के साथ हैं वे ऐसे मुत्तक़ियों का वर्णन है जिन्हों ने तक़्वा को वहां तक निभाया जहां तक उनकी ताक़त थी। बशरियत के अंगो ने जहां तक उनका साथ दिया बराबर तक़्वा पर क़ायम रहे यहाँ तक कि उनकी ताक़तें हार गईं। और फिर ख़ुदा तआला से उन्होंने और ताक़त तलब की जैसे कि اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ س से ज़ाहिर है। اِيَّاكَ نَعْبُدُ۔ अर्थात अपनी ताक़त तक तो हमने काम किया और कोई दक़ीक़ा फ़रोगुज़ाशत नहीं किया। اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ अर्थात आगे चलने के लिए और नई ताक़त तुझ से तलब करते हैं। जैसे हाफ़िज़ ने कहा है। शायर ने

ہاں اگر لطفِ شُما پیش "مابِداں منزِلِ عالی نتَوانیم رسید"

"نِہَد گامے چند"

कि हम उस आली मंज़िल तक नहीं पहुंच सकते जब तक कि तुम्हारी मेहरबानी साथ न हो।

"अतः ख़ूब याद रखो कि ख़ुदा तआला के नज़दीक मुत्तक़ी होना और बात है और इन्सानों के नज़दीक मुत्तक़ी होना और बात। मसीह अलैहिस्सलाम के वक़्त जो मुख़ालिफ़ों के जत्थे इत्यादि बनते थे उस का बायस भी यही था कि जो आम लोग यहूद के नज़दीक मुस्लिम थे और मुत्तक़ी परहेज़गार तस्लीम किए जाते थे वे मुख़ालिफ़ थे। अगर वे मुख़ालिफ़ न होते तो जत्थे इत्यादि न बनते। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त में भी यही हाल था। अफ़सोसनाक, लालसा, पाखंड,

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affiliated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001

طالب دعا

Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

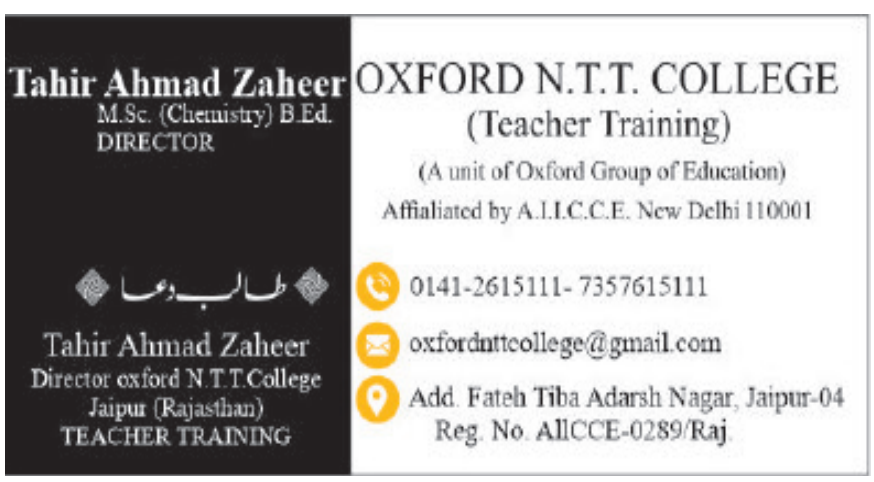

पृष्ठ 3 का शेष

आविर्भाव और इज्ज़त की निगहबानी इत्यादि बातें थीं जिन्हों ने हक़ की क़बूलीयत से उनको रोके रखा। उद्देश्य तक़्वा मुश्किल शैय है जिसे अल्लाह तआला अता करता है तो इस की अलामात भी साथ ही रख देता है। सच्ची बात यह है कि हक़ जब ज़ाहिर हो तो जो उसे ख़ाह नख़्वाह रद्द करता है और दलायल, न्यायशास्त्र, मनक़ूलात और ख़ुदा तआला के निशानों को टालता जाए वे कब मुत्तक़ी हो सकता है। सच्ची बात यह है कि हक़ जब ज़ाहिर हो तो उसे जो ख़ाह चाहे न चाहे रद्द करता है और दलायल माक़ूलात मनक़ूलात और ख़ुदा तआला के निशानात को टालता जाता है वह कदापि मुत्तक़ी नहीं हो सकता। मुत्तक़ी को तो तरसाँ और लर्ज़ां होना चाहिए।"

अपनी आने के वर्णन में फ़रमाते हैं। "क्या दुनिया में ऐसा हुआ है कि चौबीस साल से बराबर एक इन्सान रात को मन्सूबा बनाता है और सुबह को ख़ुदा की तरफ़ लगा कर कहता है कि मुझे यह वही या इलहाम हुआ और ख़ुदा तआला इस से मुवाख़िज़ा नहीं करता। इस तरह से तो दुनिया में अंधेरा पड़ जाए और मख़लूक़ तबाह हो जाए। मुत्तक़ी तो एक ही बात से फ़ायदा उठा सकता है और यहां तो हज़ारों हैं। ज़माना अलग पुकार रहा है। अहादीस مِنْكُمْ مِنْكُمْ कह रही हैं। सूरत नूर में भी مِنْكُمْ है। निर्दयता और पशुओं की तरह की तरह जो ज़िंदगी व्यतीत हो रही है वे अलग बता रही है। सदी के सिर पर कहते थे कि मुजद्दिद आता है। अब बाईस साल भी हो चुके।" उस वक़्त जब बयान दे रहे हैं। उस वक़्त फ़रमाते हैं। "सुर्यग्रहण और चंद्रग्रहण भी हो लिया। ताऊन भी आ गई। हज भी बंद हुआ। इन सब बातों को देखकर अगर अब भी ये लोग नहीं मानते तो हम क्योंकर जानें कि उनमें तक़्वा है।" ये ग़ैरों को जो अब है जो मुत्तक़ी होने का और नेक होने का और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर कुफ़्र के फ़तवे लगाने की बातें करते हैं । इसी तरह लोगों को भी वरग़लाते हैं उनको भी ख़राब कर रहे हैं।

फ़रमाया "हमने बार-बार कहा कि आओ और जिन बातों का तुमको सवाल करने का हक़ पहुंचता है वे पूछो। हाँ ये नहीं होगा कि क़ुरआन शरीफ़ तो कुछ कहे और तुम कुछ कहो और ऐसे कथन पेश करो जो उस के मुख़ालिफ़ हों। मसीह का नुज़ूल जस्मानी आसमान से मानते हैं हालाँकि वे तब सही हो सकता है जबकि प्रथम ऊपर उठना हो। क़ुरआन मसीह की वफ़ात वर्णन करता है और ये कहते हैं कि छत फाड़ कर आसमान पर चला गया। क्या तक़्वा इस बात का नाम है कि यक़ीन को तर्क कर के संदेहों की इत्तिबा की जाए। सच्चे तक़्वा का पता क़ुरआन से मिलता है कि देख लेवे कि तक़्वा वालों ने क्या-क्या काम किए।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 7 पृष्ठ 73 से 76 ऐडीशन 1984 ई.)

तक़्वा के हवाले से जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं "तक़्वा वाले पर ख़ुदा की एक तजल्ली होती है। वे ख़ुदा के साया में होता है परन्तु चाहिए कि तक़्वा ख़ालिस हो और इस में शैतान का कुछ हिस्सा न हो अन्यथा शिर्क ख़ुदा को पसंद नहीं और अगर कुछ हिस्सा शैतान का हो तो ख़ुदा तआला कहता है कि सब शैतान का है। फ़रमाया ".... हम अपनी जमाअत को कहते हैं कि केवल इतने पर वे मग़रूर न हो जाएँ कि हम नमाज़ रोज़ा करते हैं या मोटे मोटे अपराध उदाहरणतः व्यभिचार, चोरी इत्यादि नहीं करते। इन ख़ूबियों में तो अक्सर ग़ैर फ़िर्क़ा के लोग मुशरिक इत्यादि तुम्हारे साथ शामिल हैं।" अर्थात वे भी नहीं करते ये बातें। "तक़्वा का मज़मून बारीक है इस को हासिल करो। ख़ुदा की अज़मत दिल में बिठाओ। जिसके आमाल में कुछ भी दिखावे हो ख़ुदा उस के अमल को वापस उल्टा कर उस के मुँह पर मारता है।" दिखावे के लिए अमल न हो। "मुत्तक़ी होना मुश्किल है उदाहरणतः यदि कोई तुझे कहे कि तू ने क़लम चुराया है तो तू क्यों ग़ुस्सा करता है।" छोटी सी बात की। किसी ने कह दिया। तू ने मेरा क़लम उठाया है तो वह ग़ुस्से में आजाए तो यह तक़्वा वालों की निशानी नहीं है। सब्र और हौसला दिखाना चाहिए। फ़रमाया "तेरा परहेज़ तो केवल ख़ुदा के लिए है।"बचना चाहिए था इस बात से। ग़ुस्से से बचना चाहिए था।'' यह तैश' ये ग़ुस्सा ''इस वास्ते हुआ कि निर्णय सच्चाई पर नहीं था।" सही सच्चाई की तरफ़ तेरा क़दम नहीं था।'' जब तक वाक़ई तौर पर इन्सान पर बहुत सी मौतें न आ जाएं वे मुत्तक़ी नहीं बनता। चमत्कारों और इल्हामत भी तक़्वा की जड़ हैं। असल तक़्वा है। इस वास्ते तुम इल्हामत और स्वप के पीछे न पड़ो बल्कि हुसूल तक़्वा के पीछे लगो।" यह नहीं है कि अमुक को इलहाम हुआ, अमुक को स्वप्न हुआ। यह देखो तक़्वा किया है। "जो मुत्तक़ी है इसी के अलहामात भी सही हैं और अगर तक़्वा नहीं तो अलहामात भी काबिल-ए-एतिबार नहीं। उनमें शैतान का हिस्सा हो सकता है। किसी के तक़्वा को इस के मुलहम होने से न पहचानो बल्कि उसके इलहामों को उसकी हालत तक़्वा से जांचो और अंदाज़ा करो। सब तरफ़ से आँखें बंद कर के पहले तक़्वा के मनाज़िल को तै करो।" फ़रमाया "... जितने नबी आए सब का मुद्दा यही था कि तक़्वा की राह सिखलाईं। اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ (अल् अनफ़ाल : 35) परन्तु क़ुरआन शरीफ़ ने तक़्वा की बारीक राहों को सिखलाया है। कमाल नबी का कमाल उम्मत को चाहता है। चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुल नबिय्यीन थे। सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। इस लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर कमालात-ए-नबुव्वत ख़त्म हुए। कमालात-ए-नबुव्वत ख़त्म होने के साथ ही खत्मे नबुव्वत हुआ। जो ख़ुदा तआला को राज़ी करना चाहे और चमत्कारों को देखना चाहे और ख़वारिक़ आदत देखना मंज़ूर हो तो उस को चाहिए कि वे अपनी ज़िंदगी भी ख़ारिक़ आदत बना ले। देखो इमतिहान देने वाले मेहनतें करते करते मदक़ूक़ की तरह बीमार और कमज़ोर हो जाते हैं। अतः तक़्वा के इमतिहान में पास होने के लिए हर एक तकलीफ़ उठाने के लिए तैयार हो जाओ। जब इन्सान इस राह पर क़दम उठाता है तो शैतान इस पर बड़े बड़े हमले करता है लेकिन एक हद पर पहुंच कर आख़िर शैतान ठहर जाता है यह वह वक़्त होता है कि जब इन्सान की निचली ज़िंदगी पर मौत आकर वे ख़ुदा के ज़ेर-ए-साया हो है ... संक्षिप्त ख़ुलासा हमारी तालीम का यही है कि इन्सान अपनी समस्त ताक़तों को ख़ुदा की तरफ़ लगा दे।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 301-302 ऐडीशन 1984 ई.)

मुख़्तलिफ़ ज़ावियों से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें जो नसाएह फ़रमाए हैं वे कुछ हवाले मैंने पेश किए हैं ताकि हमें तक़्वा के अर्थ और इस की गहराई का भी इलम हो और हम जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है आप की जमाअत में शामिल हो कर तक़्वा की हक़ीक़ी रूह को समझते हुए इस पर चलने वाले भी हों। रमज़ान के इन बक़ीया दिनों में जिस हद तक मुम्किन हो हमें कोशिश करनी चाहिए कि तक़्वा की हक़ीक़त को समझते हुए हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद अदा करने वाले बनें। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

अहमदी विद्यार्थी ध्यान दें
(जामिआ अहमदिया क़ादियान में प्रवेश के लिए)

जामिआ अहमदिया क़ादियान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा स्थापित किया हुआ वह पवित्र संस्थान है जहां से अब तक सैंकड़ों उल्मा और मुबल्लेग़ीन शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं और इस्लाम की सच्ची शिक्षा को दुनिया के किनारों तक पहुंचाने का कर्तव्य अदा कर रहे हैं। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने भी कई अवसरों पर अहमदी विद्यार्थियों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़ायम करदा मुक़द्दस दीनी संस्थान से शिक्षा प्राप्त करके सिलसिला की ख़िदमत की तरफ़ ध्यान दिलाया है। इस लिए सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आदेशों की रोशनी में ज़्यादा से ज़्यादा वाकफ़ीन नौ और ग़ैर वाकफ़ीन नौ विद्यार्थियों को जामिआ अहमदिया में दाख़िला लेकर दीनी तालीम हासिल करके सिलसिला की ख़िदमत के लिए आपने आपको पेश करना चाहिए।

शैक्षणिक वर्ष 2022-2023 ई. के लिए जामिआ अहमदिया में दाख़िला की कार्रवाई अप्रैल के महीने 2022 ई. से शुरू हो गई है। वर्तमान हालात में जामिआ अहमदिया में दाख़िला के इच्छुक विद्यार्थियों के दाख़िला की कार्रवाई ऑनलाइन ही की जा रही है। इस लिए वे विद्यार्थियों जो जामिआ अहमदिया में दाख़िला लेना चाहते हैं वे विभाग वक़्फ़-ए- नौ भारत (नज़ारत तालीम) से सम्पर्क करें और जल्द से जल्द जामिआ अहमदिया का दाख़िला फ़ार्म भर करके दफ़्तर वक़्फ़-ए- नौ भारत (नज़ारत तालीम) में मेल के माध्यम से या डाक से भिजवाएं। दाख़िला की शर्तों के लिए विभाग वक़्फ़-ए-नौ भारत (नज़ारत तालीम) से सम्पर्क किया जा सकता है।

(सदर नैशनल कैरीयर प्लैनिंग कमेटी वक़्फ़-ए-नौ भारत)

★ ★ ★

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यहां यह भी वाज़िह कर दूं कि कुछ मर्द अपनी पत्नियों को अपने रिश्तेदारों से मिलने से रोकते हैं यहाँ तक कि माँ बाप से भी मिलने से रोकते हैं। यह इंतिहाई जहालत की बात है। अगर अल्लाह तआला को ख़ुश करना है अल्लाह तआला की मदद हासिल करने वाला बनना है तो फिर इन व्यर्थ की और बेहूदा बातों को छोड़ना होगा।

फिर हुक़ूकुल ईबाद की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यतीमों और मिस्कीनों का ख़्याल रखो। यह एक बहुत अहम काम है जिसकी तरफ़ हर अहमदी को तवज्जा देनी चाहिए। अगर ख़ुद किसी यतीम को नहीं भी जानते तो जमाअत में यतामी फ़ंड है इस में ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा लेना चाहिए। ईद की ख़ुशियों में यतीमों को शामिल करें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यतीम की परवरिश करने की एहमीयत को वर्णन करते हुए फ़रमाया कि मैं और यतीम की परवरिश करने वाला जन्नत में यूं इकट्ठे होंगे जैसे हाथ की दो उंगलियां इकट्ठी होती हैं। इसी तरह जमाअत में और भी इमदाद के कुछ फ़ंड हैं शादी फ़ंड है मरीज़ों के फ़ंड हैं विद्यार्थियों की तालीम के फ़ंड हैं इस में जिनको तौफ़ीक़ हो हिस्सा लेना चाहिए।

फिर इस्लाम महरूमों और कमज़ोरों के हुक़ूक़ की भी बात करता है। मातहतों के हुक़ूक़ की भी बात करता है। कौन सा हक़ है जो इस्लाम ने छोड़ा है। फिर हुक़ूक़ के क़ायम करने के लिए एक ख़ूबसूरत तालीम जो क़ुरआन-ए-करीम ने बयान फ़रमाई है वह है अदल और इन्साफ़ की तालीम। उदाहरणतः एक जगह फ़रमाया कि ऐसी सच्ची गवाही इन्साफ़ क़ायम करने के लिए दे कि चाहे अपने ख़िलाफ़ या अपने माता पिता के ख़िलाफ़ या क़रीबी रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ देनी पड़े तो दे। ये वे बातें हैं जो हम अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए करते हैं और ये बातें दुनिया को हमारे लिए जन्नत बना देती हैं। असल नेकी जिसकी इस्लाम हमें तालीम देता है यही है कि दूसरों के हुक़ूक़ का ख़्याल रखा जाए न कि अपने हक़ हासिल करने के लिए इस दुनिया में फ़साद पैदा किया जाए। यही एक मोमिन की शान होनी चाहिए कि यह कोशिश करे कि उस के ज़िम्मा किसी का हक़ बाक़ी न रहे। यही चीज़ें हमारी ईद को हक़ीक़ी ईद बना सकेंगी। केवल एक दिन की ईद नहीं बल्कि ऐसी ईद जो अल्लाह तआला की रज़ा हासिल कर के दाइमी ईद बनेगी। फिर ईद के अवसर पर दुनिया की उमूमी फ़िक्र भी हमें करनी चाहिए इस के लिए दुआ भी करनी चाहिए। केवल अपनी ख़ुशियों में ही इतमीनान न हासिल कर लें। दुनिया आजकल तबाही की तरफ़ जा रही है हमें उस की फ़िक्र है और होनी चाहिए कि इन्सानियत को बचाना भी हमारा काम है।

अतः जैसा कि मैंने कहा यह हुक़ूक़ की अदायगी का सही इदराक हासिल करना और दुनिया को इस्लाम की तालीम का सही तौर पर बताना उस का पता देना और ख़ुद इस पर अमल करना यह तब्लीग़ के नए रास्ते खोलेगा और दुनिया को बचाने का भी ज़रीया बनेगा। हमें इस तरफ़ ख़ास तवज्जा दीनी चाहिए। तबाही और बर्बादी की तरफ़ बड़ी तेज़ी से लोग बढ़ रहे हैं। ऐसे में एक ही चीज़ है जो दुनिया को तबाही से बचा सकती है और वह अपने पैदा करने वाले ख़ुदा की पहचान है और इस की तरफ़ आना है। दुनिया को तो न इस बात का इदराक है न इस का इलम। यह अहमदियों की ज़िम्मेदारी है कि उनको इस रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुतबा ईदुल फ़ित्र 2 मई 1957 ई. में यही बात वर्णन फ़रमाई कि हमारी ईद दरअसल वही ईद हो सकती है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ईद हो। अगर हम ईद मनाएं और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न मनाएं तो हमारी ईद क़तअन ईद नहीं कहला सकती। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ईद सेवय्यां खाने से नहीं आती न शीर ख़ुरमा खाने से आती है बल्कि उनकी ईद क़ुरआन और इस्लाम के फैलने से आती है। अगर क़ुरआन और इस्लाम फैल जाए तो हमारी ईद में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी शामिल हो जाऐंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुश होंगे कि जिस मिशन को मैं लेकर आया था अभी तक मेरी उम्मत ने उसे क़ायम रखा हुआ है। अतः कोशिश करो कि इस्लाम की इशाअत हो क़ुरआन की इशाअत हो ताकि हमारी ईद में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी शामिल हों।

अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ दे कि हम ऐसी ईदों के नज़्ज़ारे देखने वाले हूँ ऐसी ईदों के हुसूल के लिए अपनी तमाम-तर सलाहीयतों को और कोशिशों को अमल में लाएं।

ख़ुतबा के आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया दुआ में असीरान की रिहाई के लिए, शोहदा के ख़ानदानों के लिए, माली क़ुर्बानी करने वालों के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला उनके अम्वाल-ओ-नफ़ूस में बे-इंतिहा बरकत अता फ़रमाए। वाकफ़ीन-ए-ज़िंदगी के लिए दुआ करें अल्लाह तआला उन्हें वक़्फ़ की रूह को क़ायम रखते हुए एक जोश और जज़्बे से काम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अल्लाह तआला हमारी हक़ीर कोशिशों में बे-इंतेहा बरकत डाले और हम इस्लाम और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विजय को दुनिया में जल्द तर देखने वाले हूँ।

पृष्ठ 5 का शेष

देता हूँ। अल्लाह करे आपका संदेश सारी संसार में गूँजे और आप लोग रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हक़ीक़ी सफ़ीर बनें।

एक मेहमान सैनेटर Mr. Michael Mullins ने कहा : मैं आपकी जमाअत की एक सुन्दर मस्जिद बनने पर मुबारकबाद प्रस्तुत करती हूँ। संसार में अमन और मुहब्बत का संदेश फैलाने की आपकी तमन्ना भी प्रशंसनीय है। मैं आइन्दा भी आपकी जमाअत के समारोह में शामिल होती रहूँगी।

एक मेहमान जो कि अपने क्षेत्र के कौंसिलर भी हैं उन्होंने कहा : यहां आने से पहले मैं समझता था कि सारे मुस्लमान एक ही तरह के हैं। बिल्कुल ऐसे जिस तरह मीडिया में नज़र आता है कि मुस्लमान दहशतगर्दी कर रहे हैं और अत्याचार कर रहे हैं। परन्तु ख़लीफतुल मसीह का भाषण सुन कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। विशेषता ख़लीफतुल मसीह के अमन के संदेश "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" से मैं बेहद प्रभावित हुआ।

इस में कोई शक नहीं कि जमाअत अहमदिया इस पर अनुकरण भी करती है जिसकी वह तब्लीग़ करते हैं। और इस संसार को आजकल इस संदेश की सख़्त आवश्यकता है। संसार को यह भी बताने की आवश्यकता है कि इस्लाम में एक जमाअत ऐसी भी है जो केवल और केवल मुहब्बत का संदेश फैलाती है।

समारोह में शामिल एक आइरिश मेहमान ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा : ख़लीफ़ा का भाषण ज्ञान से परिपूर्ण था। जब हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहब पार्लियामेंट गए थे उस समय भी मेरी उन से मुलाक़ात हुई और अब इस समारोह में भी मैंने ख़लीफ़ा को सुना है इस में कोई शक नहीं कि ख़लीफ़ा का गालवे में एक महत्वपूर्ण अवसर पर पधार न गालवे के लिए अत्यधिक सम्मान की बात है।

एक महिला कौंसिलर ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा :

मेरे विचार में इस समारोह में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति कुछ Tense था। परन्तु जब ख़लीफतुल मसीह ने अपने भाषण में भी इस बात का वर्णन कर दिया कि यहां पर उपस्थित कुछ लोग इस्लाम के सम्बन्ध में भय-ओ-ख़दशात रखते होंगे। जूंही ख़लीफ़ा ने इस बात का प्रकटन किया तो प्रत्येक संतुष्ट सा हो गया और मैं ख़लीफ़ा के इस शानदार भाषण को बहुत सराहती हूँ।

एक मेहमान लेखक जोकि अख़बार Galway Advertizer के लिए काम करते हैं उन्होंने कहा ख़लीफतुल मसीह की तक़रीर बहुत शानदार थी और इन्सान को सोचने पर मजबूर करती है। तक़रीर में उन्होंने इस्लाम अहमदियत की वज़ाहत की और बताया कि कुछ शिद्दत पसंदों ने इस को बिगाड़ दिया है। ख़लीफ़ा ने बहुत उत्कृष्ट रंग में साबित किया है कि इस्लाम अमन मुहब्बत और बर्दाश्त का धर्म है। मुझे ख़लीफ़ा की मुदल्लिल और स्पष्ट तक़रीर सुनकर बहुत अच्छा लगा। इसके अतिरिक्त ख़लीफतुल मसीह से आमने सामने मुलाक़ात करना भी मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण अवसर था।

उन्हों ने कहा : मैं जमाअत अहमदिया को पिछले लगभग ग्यारह वर्षों से जानता हूँ। यह जमाअत एंटर फ़ेथ प्रोग्रामज़ को आयोजित करती है। फिर इस मस्जिद का नाम 'मर्यम रखा है यह भी इस्लाम और ईसाइयत के मध्य एक सम्बन्ध स्थापित करता है।

डिप्टी स्पीकर नैशनल पार्लियामेंट "माईकल पैकेट" Michael P.Kitt ने कहा : आज का यह समारोह बहुत सुन्दर था। ख़लीफतुल मसीह का मुहब्बत और अमन के बारे में भाषण मेरे लिए बहुत हौसला देने वाला है। ख़लीफ़ा के भाषण से पता चलता है कि मुहब्बत के संदेश में कितनी ताक़त है।

ज़फ़र मस्जिद के उद्घाटन समारोह में शामिल होने वाले एक मेहमान ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा : मस्जिद के उद्घाटन के इस समारोह में शमूलियत करके मैं बहुत ख़ुश हूँ और आपके मुहब्बत और अमन के संदेश से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैं इस संदेश को अपने अन्य लोगों तक भी पहुंचाऊंगा।

एक मेहमान डर्डरी मक कीना Deirdre Mc Kenna ने कहा :

विभिन्न बैक ग्राऊंडज़ से सम्बन्ध रखने वाले लोगों को एक जगह मुत्तहिद देख कर मुझे बहुत ख़ुशी हुई। अल्लाह करे कि आज का यह समारोह हमारे समाज में कुशादा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 26 May 2022 Issue No.21

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

दिल्ली की रिवायत का आरंभ करने वाला साबित हो और आयरलैंड के समस्त लोग उस का हिस्सा बन जाएं ताकि हम आपस में सकारात्मक संबंध कायम करते हुए जीवन गुज़ारना सीखीं और आयरलैंड में एक बेहतरीन भविष्य की बुन्याद पड़े।

एक मेहमान मार्था Martha साहब ने कहा : मैं आप लोगों के एक ऐसे समारोह में बुलाने पर शुक्रिया अदा करता हूँ जो ज़हन को जिला बख़शने वाला है। इस में कोई शक नहीं कि आजकल लोग बहुत भयज़दा हैं। परन्तु इस समारोह ने हम सबको धार्मिक बर्दाश्त का दरस दिया है। ख़लीफ़ा ने हमें इस्लाम और क़ुरआन की मुहब्बत और अमन की शिक्षाओं से आगाह किया जो हम सब के लिए बहुत संतुष्टि बख़श था। आज के इस समारोह से हमने बहुत सीखा।

एक मेहमान Jenny McClean जेनी मकलेन ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा :

मैं आज शाम के इस समारोह से बहुत प्रभावित हुई हूँ। ख़लीफतुल मसीह का भाषण अत्यधिक ज़बरदस्त था जिसमें उन्होंने कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण मामलों का वर्णन फ़रमाया। वहां उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ख़लीफतुल मसीह के भाषण से बहुत प्रभावित दिखाई दिया। ईः भी बहुत महत्वपूर्ण बात थी कि ख़लीफ़ा ने अपने भाषण में मुस्लमान संसार में उपस्थित झगड़ों का भी वर्णन किया।

गालवे सिटी ईस्ट के कौंसिलर Mr. Terry O'Flaherty ने कहा : ख़लीफतुल मसीह का भाषण अत्यधिक महान और प्रभावित करने वाला था। मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं का संदेश आजकल के ख़राब हालात की ऐन आवश्यकता है।

उन्होंने कहा : मैं जमाअत अहमदिया गालवे और सारे संसार में उपस्थित अहमदियों के रोशन भविष्य का दुआ करता हूँ।

एक मेहमान ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा : ख़लीफतुल मसीह के अमन और मुहब्बत के संदेश से में बहुत प्रभावित हुआ हूँ। इस संदेश के माध्यम मुझे इस्लाम की ख़ूबियों का पता चला और इस्लाम के बारे में मेरे संदेह दूर हुए।

एक मेहमान ने कहा : इस ज़बरदस्त समारोह में मदऊ करने के लिए मैं आप सब का शुक्रिया अदा करता हूँ। ख़लीफतुल मसीह का भाषण अत्यधिक खरा, ख़ुलूस और रूहानियत से भरा हुआ और इलमी था। काश कि ज़्यादा लोग ख़लीफतुल मसीह का भाषण सुन पाते।

एक मेहमान ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा : यह ज़हनों को जिला बख़शने वाली शाम थी। आज मैंने आपके इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीखा है। मैं स्वीकार करता हूँ कि पहले मुझे इस्लाम के बारे में इस क़दर मालूमात नहीं थीं परन्तु आज यहां आकर मुझे इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को का पता चला। आप सब शुक्रिया।

एक मेहमान महिला ने कहा : इस महान समारोह में दावत के लिए आप लोगों का शुक्रिया अदा करती हूँ। ख़लीफतुल मसीह का भाषण हिक्मत से भरा और दिल को छूने वाला था। मेरे लिए ऐसी समारोह में शामिल होना जिसमें ख़लीफतुल मसीह उपस्थित हूँ गर्व का स्थान है।

एक और मेहमान महिला ने कहा : ख़लीफतुल मसीह ने अपने भाषण में जो अमन का संदेश दिया है और जिहाद की वज़ाहत की है इस से मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ। इसी तरह मुझे इस मस्जिद का नाम भी बहुत अच्छा लगा। इस मस्जिद का नाम ही समाज में आपसी प्रेम को बढ़ावा दे रहा है यहां आकर इस्लाम के सम्बन्ध में मुझे एक नई किस्म की आगाही हुई।

उन्हों ने कहा : इस जमाअत पर मज़ालिम का सुन कर मुझे बहुत दुख हुआ है।

एक मेहमान ने कहा : यह समारोह अत्यधिक दोस्ताना माहौल में हुआ। ख़लीफ़ा का भाषण बहुत शानदार था। उनका वर्णन अत्यधिक स्पष्ट और बनावट से पाक था और अमन को फ़रोग़ देने वाला था।

एक मेहमान सियास्तदान Jhon Rabbit साहब ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा : आज के समारोह ने मुझे Uplift कर दिया है मैं ख़लीफतुल मसीह के भाषण से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मेरा इस्लाम के बारे में नज़रिया पूर्णतः तबदील हो गया है। मेरा एक मित्र सऊदी अरब में रहता है और जो बातें वह मुझे इस्लाम के बारेमें बताता है इसके विपरीत मैंने यहां तो सुन्दर इस्लाम को देखा है। इस्लाम वाक़ई शांतिप्रिय, मुहब्बत औ प्यार और एक दूसरे के लिए हमदर्दी रखने वाला धर्म है।

एक महिला मेहमान Mrs. Bernadette जोकि डबलिन में एजूकेशन फाऊंडेशन की डिप्टी प्रिंसिपल हैं उन्होंने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा : ख़लीफतुल मसीह का व्यक्तित्व अत्यधिक प्यार करने वाला है। मुझे अच्छा लगा कि उन्होंने इस मस्जिद का नाम "मर्यम: रखा है । उनके भाषण से ही मुझे पता चला कि इस्लाम में "मर्यम" का क्या स्थान है और क़ुरआन-ए-करीम में "हज़रत मर्यम अलैहिस्सलाम" की प्रशंसा वर्णन की गई है। मेरे निकट यह बहुत दिलकश नुक़्ता है जो इन समस्त ईसाइयों को बताना चाहिए जो इस्लाम के विरुद्ध बोलते हैं।

★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

अपने ज़हनों के सफ़र में उनसे मदद नहीं लेते और उनकी हालत पर ग़ौर कर के इस ज़ेर-ए-बहस मसला में जहालत के मुल्क से इलम के मुल्क की तरफ़ सफ़र नहीं करते ...

वह عبرة क्या है जिसकी तरफ़ इस आयत में इशारा किया गया है वह स्वयं ही अगले शब्दों में वर्णन फ़र्मा दिया है और वह यह है कि चार पाए घास पत्ते खाते हैं जिससे गोबर बनता है फिर गोबर में से एक हिस्सा ख़ून बनता है और इस ख़ून का एक हिस्सा दूध बन जाता है जिसे इन्सान मज़े लेकर पीता है और वह ऐसा ख़ालिस होता है कि कोई नफ़ासत पसंद इन्सान भी इस के पीने में कराहत महसूस नहीं करता हालाँकि दूध पहले ख़ून था और ख़ून इस फुज़ला से बनता है जो आहार से जानवर के मादा में तैयार होता है और वहां से अंतड़ियों में जा कर बारीक नसें के माध्यम से दिल की तरफ़ ले जाया जाता है जहां जाते ही वह ख़ून बन जाता है और ख़ून थनों में आकर दूध की शक्ल इख़तियार कर लेता है।

इस आयत में इस मज़मून की तरफ़ इशारा किया गया है कि वही घास और पते जिनको इन्सान इस्तिमाल नहीं कर सकता जानवर के पेट में जा कर गोबर बनते हैं और इस से ख़ून बनता है और इस से दूध। और वह दूध ख़ालिस होता है कोई गंदगी इस में नहीं होती और पीने में मज़ेदार होता है। इस घास को इन्सान इस जानवर से बाहर दूध की शक्ल में तबदील नहीं कर सकता लेकिन अल्लाह तआला उसको लेकर जानवर के द्वारा से दूध बना देता है इस से इन्सानों को नसीहत हासिल करनी चाहिए कि वही फ़ितरती तालीम जिस पर चल कर इन्सान यक़ीन के मर्तबा तक नहीं पहुंच सकता और हज़ारों गंद औइर कमियां इस में पाई जाती हैं, जब अल्लाह तआला की बनाई हुई रुहानी मशीन में से गुज़रती है तो मुसफ़्फ़ी दूध की तरह हो जाती है जिस से किसी किस्म का नुक़्सान रुहानी सेहत को नहीं पहुंच सकता बल्कि हर तरह फ़ायदा पहुंचता है। अतः जानवरों के अंदर जो दूध बनता है इस से ये लोग क्यों इबरत हासिल नहीं करते और नहीं समझते कि इन्सान की सच्ची ग़िज़ा फ़ितरत के मीलान उस समय ही बन सकती है जबकि अल्लाह तआला उनको रुहानी दूध की शक्ल में बदल दे और यह काम इन्सान ख़ुद नहीं कर सकता। जो घास को दूध में तबदील नहीं कर सकता वह फ़ितरत के इन घड़े जज़बात को आला तालीम में कब तबदील कर सकता है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग4, पृष्ठ 190 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad